प्रकाशन तिथि : 01 मई, 2021
प्रेषण तिथि : 04 मई, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 04 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'डरें नहीं, मुकाबला करें, अनुशासन मानें'

(कोरोना महामारी के संबंध में माननीय संघप्रमुख श्री का संदेश)

मैं आप लोगों को सलाह देना चाहता हूं कि अपनी ईच्छा शक्ति को कभी कमजोर न होने दें, रोग आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा लेकिन इसके साथ शर्त यही है कि अनुशासन को जरूर मानें। परमात्मा से प्रार्थना करें कि वे हमारा कल्याण करें लेकिन हम स्वयं भी हमारा कल्याण करना सीख जायें। स्वानुशासन से राष्ट्र और समाज को अनुशासित किया जा सकता है, इन बातों का ध्यान रखें। 27 अप्रेल को श्री क्षत्रिय युवक से संबद्ध सोशल मीडिया अकाउंट्स के माध्यम से अपना संदेश देते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 में कोरोना नामक महामारी आई, अनेक लोग संक्रमित हुए, अनेक अस्पतालों में भर्ती हुए, ठीक हुए, लेकिन कुछ को संसार छोड़ना पड़ा। बीमारी से कम व बीमारी के भय से अधिक मरे। मैं स्वयं संक्रमित हुआ। शरीर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय की बीमारी, प्रोस्टेट आदि बीमारियों से जर्जर हो चुका है, फिर भी ठीक हो गया।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'कार्य प्रणाली सामूहिक पर प्रयत्न व्यक्तिगत'

संघ के सभी संभागों ने वर्चुअल रूप से मनाई रामनवमी

श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रणाली सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली है। हम समूह में बैठकर, समूह में बात कर, समूह में ही अन्य क्रियाएं कर उन संस्कारों का निर्माण करते हैं जो हमें हमारे जीवन लक्ष्य की ओर अग्रसर करते हैं। इस प्रकार हमारी प्रणाली सामूहिक है लेकिन हमारे प्रयत्न तो व्यक्तिगत ही होंगे। समूह में किए जाने वाले कार्यों को हम व्यक्तिगत रूप से जितनी तत्परता से संपन्न करेंगे तो हमें लक्ष्य की ओर बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। सामूहिक निदेर्शों को व्यक्तिगत जीवन में उतारने के लिए हम समूह की अनुकूलता का उपयोग कर अभ्यास में संलग्न होंगे तो निश्चित रूप से मानव जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे। रामनवमी के अवसर पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रमों में बाड़मेर संभाग के कार्यक्रम में जुड़े स्वयंसेवकों व सहयोगियों को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने उपरोक्त बात

कही। उन्होंने कहा कि हमें यह कार्यक्रम करना है केवल इसीलिए यह कार्यक्रम नहीं कर रहे बल्कि भगवान राम ने जो आदर्श स्थापित किए, क्षात्र धर्म का पालन करते हुए, प्रजा का पालन पोषण करते हुए और दुष्टों का संहार करते हुए जो संघर्ष किया वह दुनियां के लिए, समाज के लिए, हमारे लिए एक दृष्टांत बन गया और वह दृष्टांत हमारे जीवन में अवतरित हो इसलिए यह कार्यक्रम किए जा रहे हैं। आज का यह दिन हर वर्ष आता है, हर वर्ष हम ताजा और नये बनकर यह कार्यक्रम करते हैं लेकिन फिर वर्ष भर के लिए भूल जायें तो यह हमारा रामनवमी मनाया जाना व्यर्थ हो जाता है। संघ की दैनिक शाखाओं में हमारे जीवन में निरंतर राम के चरित्र को अवतरित करने का अभ्यास करवाया जाता है, रोज ही हमारे भीतर घटित होने वाली रामनवमी के, हमारे भीतर चल रहे राम चरित्र के दर्शन करवाये जाते हैं। भगवान राम ने जो संघर्ष किया वह निरंतर हमारे भीतर तभी जारी रह सकता है जब अनवरत रूप से रोजाना हम इसका अभ्यास करें। यह एक प्रकार का अनुष्ठान है और अनुष्ठान में जिस प्रकार की नियमितता और निरंतरता आवश्यक होती है वही इस अभ्यास में अपेक्षित है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नई तरह का गुजरात मॉडल

गुजरात सरकार के अधिकृत वेब पोर्टल पर गुजरात के इतिहास को लेकर की गई टिप्पणी में लिखा गया है कि गुजरात गुज्जरों की भूमि है। यहाँ 7वीं व 8वीं शताब्दी में गुज्जरों का शासन रहा है और प्रतिहार, परमार और सोलंकी आदि शाही गुज्जर वंश हैं। जबकि वस्तुस्थिति यह है कि गुजरात में गुज्जर जाति की आबादी नगण्य है। गुजरात का नाम गुर्जरात्रा क्षेत्र के कारण गुजरात हुआ है ना कि गुज्जर जाति के कारण। गुज्जर एक जाति सूचक शब्द है लेकिन गुर्जर एक क्षेत्र का नाम है, वैसे ही जैसे मालवा, सौराष्ट्र, कच्छ, मारवाड़, मेवाड़ आदि। इस क्षेत्र में निवास करने वाले या शासक रहे लोग अपनी पहचान के लिए गुर्जर शब्द का उपयोग करते हैं जैसे मेवाड़ी, मारवाड़ी, कच्छी आदि शब्दों का प्रयोग होता आया है। लेकिन पूरे देश में कुछ शरारती तत्व अपनी तरफ से मिथ्या तथ्य घड़कर हमारे इतिहास पर प्रश्न उठाते रहे हैं चाहे वे दक्षिणपंथी हों चाहे वामपंथी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

'समय को परिभाषित करने वाले सम्राट विक्रमादित्य'

क्षत्रिय समाज ने संसार और राष्ट्र को ऐसे महान व्यक्तित्व दिए हैं जिनकी तेजस्विता के सामने रत्नों और हीरों की चमक भी फीकी लगती है। वीर विक्रमादित्य परमार भी क्षत्रिय कौम के ऐसे ही एक सपूत थे जिन्होंने अपनी महानता से जन-जन के हृदय में अपना स्थान बनाया। उज्जयैनी के शासक गंधर्वसेन के पुत्र विक्रमादित्य ने अपने पराक्रम से शकों को भारत से तब बाहर खदेड़ा जब उनके भाई भर्तृहरि ने वैराग्य धारण कर लिया था और शकों का अत्याचार सीमाएं लांघने लगा था। विक्रमादित्य ने विदेशी लुटेरों को भारतवर्ष से बाहर खदेड़ने के लिए

विक्रम सेना का गठन किया और पूरे भारतवर्ष में अपना एकछत्र शासन स्थापित किया। उन्होंने चक्रवर्ती राजा की उपाधि धारण की तथा अपने राज्य का विस्तार अरब और मिस्र तक किया। विक्रमादित्य ने विक्रम संवत का प्रारंभ किया और समय को अपने नाम से परिभाषित किया। उनकी न्यायप्रियता और प्रजावत्सलता की अनेक कथाएं पुराणों में उल्लेखित है। उनके दरबार से ही नवरत्नों की परंपरा प्रारम्भ हुई जिसका मुगल बादशाहों द्वारा भी अनुसरण किया गया। धनवंतरी, कालिदास, अमर सिंह, वराहमिहिर जैसे विद्वान उनके नवरत्नों में सम्मिलित हैं। ऐतिहासिक ग्रंथ, शिलालेख और उनके बारे में प्रचलित अनेकों दंतकथाएं जनमानस पर वीर विक्रमादित्य के व्यक्तित्व के अमिट प्रभाव की प्रमाण हैं। हमारे ऐसे पूर्वजों से हमें अवश्य प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए। उपरोक्त बातें संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने विक्रमोत्सव (विक्रम संवत के प्रथम दिन) पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में कहीं। उन्होंने कहा कि यदि हम हमारे पूर्वजों की जयंतियां मनाएंगे, उन्हें स्मरण रखेंगे तो उनको अनधिकृत रूप से हड़पने और इतिहास को विकृत करने की कोशिशें स्वतः ही असफल हो जाएंगी। वर्चुअल कार्यक्रम में देशभर से समाजबन्धु जुड़ें तथा महान विक्रमादित्य के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। वर्चुअल कार्यक्रम के अतिरिक्त विक्रमोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक स्थानों पर भौतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुए।

जालोर संभाग के भीनमाल प्रान्त के रामसीन गांव में संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा की उपस्थिति में सम्राट विक्रमादित्य स्मृति समारोह मनाया गया।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित बदलते दृश्य पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में जोधपुर के शासक राव मालदेव का उल्लेख आया है, इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में जोधपुर के शासक राव मालदेव का उल्लेख है इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

राव मालदेव राव गांगा के ज्येष्ठ पुत्र थे, जिनका जन्म वि.सं. 1568 पौष माह की प्रतिपदा को हुआ और राव गांगा के बाद बीस वर्ष की अवस्था में जोधपुर की राजगद्दी पर बैठे। उस समय उनका अधिकार जोधपुर और सोजत दो ही परगनों पर था। मारवाड़ के शेष परगनों के सभी राजपूत सामंत अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र थे, केवल आवश्यकता पड़ने पर जोधपुर के शासक की सैन्य आदि सहायता कर दिया करते थे। साम्राज्यवाद के दृढ़ समर्थक और मनमानी करने वाले सामंतों के विरुद्ध विचार रखने वाले राव मालदेव को यह व्यवस्था बड़ी अखरी और उन्होंने यह संकल्प किया कि मारवाड़ के समस्त परगनों पर राज्य का पूर्ण अधिकार कायम करके उसे सुव्यवस्थित किया जाए। इसी आकांक्षा को लेकर गद्दी पर बैठते ही वह अपने मन्तव्य पर अग्रसर हुए। सामयिक परिस्थिति भी राव मालदेव की सहायक बन गई थी। दिल्ली के राज्यासन पर हुमायूं था, जिसमें अपने पिता बाबर के जैसी प्रतिभा नहीं थी। वह एक निर्बल सा बादशाह था इधर राजपूत राज्यों में मेवाड़ का शासन महाराणा सांगा के बाद साधारण स्तर पर आ गया था, जयपुर में कच्छवाहों का शासन भी प्रभावी नहीं था। राजस्थान में उस समय यदि कोई शक्ति थी, तो वह राठौड़ों की थी। उनमें केवल यह कमी थी कि वे एक सूत्र में बंधे हुए नहीं थे और राव जोधा की सामंतवादी योजना के अनुसार बिखरे हुए थे। मारवाड़ का लम्बा चौड़ा क्षेत्र राठौड़ों के अधिकार में था और उत्तरी सीमा पर बीकानेर में भी राठौड़ राव जैतसी का शासन था। सेवकी के युद्ध में राव जैतसी ने राव मालदेव के पिता राव गांगा का ही पक्ष लिया था। सर्वप्रथम राव मालदेव ने भाद्राजून और रायपुर के सिंघल राठौड़ों के अधिकृत क्षेत्रों को अपने अधीन किया, वि.सं. 1591 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। उस अवसर पर राव मालदेव तत्कालीन विक्रमादित्य की सहायता को चित्तौड़ पहुंचे थे। वि.सं. 1592 में नागौर के पास राव मालदेव के थाने रड़ौद पर अखेराज का पौत्र नियुक्त था। नागौरी खान की सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया जिससे वह लड़कर वीरगति को प्राप्त हुआ था। इसका बदला लेने के लिए उसके भाई रणमल ने नागौर के गांवों में उपद्रव करना शुरू कर दिया। इसके हैरान होकर नागौरी खान ने 19 ग्राम राव मालदेव को देकर संधि की। इसी वर्ष नागौरी खान ने मेड़ता पर आक्रमण किया। दौलत खां को मेड़ता पर राव मालदेव ने ही भेजा था। इसके पीछे से राव मालदेव ने नागौर पर आक्रमण कर दिया। दौलत खां को पता लगने पर वह मेड़ते से भाग कर वापस आया परन्तु राव मालदेव ने उसे भगा दिया। राव का नागौर पर अधिकार हो गया। नागौर के थाने पर मांगलिया वीरा, रड़ोद व चांवड़ी पर राठौड़ अचला और हीनावाड़ी के थाने पर जैता व कूंपा को नियुक्त करके सुदृढ़ व्यवस्था कर दी। वि.सं. 1593 में राव मालदेव ने जैसलमेर रावल लूणकरण की पुत्री ऊमादे से विवाह किया, जो रूठी रानी के नाम से मशहूर थी। राव मालदेव ने वि.सं. 1594 में डूंगरसिंह जैतमालोत से सिवाणा, 1595 में बिहारी पठानों से जालोर तथा उसी वर्ष सांचौर, खाबड़ आदि प्रदेशों पर अधिकार किया। वि.सं. 1596 में जब हुमायूं और शेरशाह सूरी में परस्पर युद्ध हुआ, राव मालदेव पूर्व की ओर चला और हिण्डौन से बयाना तक के प्रदेश को विजय किया। वहां से लौटते समय 1598 में बीकानेर पर अधिकार कर लिया। युद्ध में राव जैतसी मारा गया। राव मालदेव वीरमदेव मेड़तिया पर कुंवरपदे से ही नाराज था। इस नाराजगी की वृद्धि का एक कारण और आ उपस्थित हुआ। वि.सं. 1591 में वीरमदेव ने गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह के हाकिम शमशेरुल मुल्क को हराकर अजमेर पर अधिकार कर लिया था। जब इसकी सूचना राव मालदेव को मिली तो उसने वीरमदेव को अजमेर उसे सौंप देने का कहलवाया, पर वीरमदेव नहीं माना। इसी कारण राव मालदेव ने उससे मेड़ता छीन लिया था। फिर वि.सं. 1598 में राव ने अजमेर भी वीरमदेव से छीन लिया। तब वह डीडवाना चला गया। वहां भी राव की सेना पहुंची और वीरमदेव को भगाकर डीडवाना पर अधिकार कर लिया। वीरमदेव रायमल कच्छवाह के पास नराणा चला गया। एक वर्ष वहां रहकर वह इधर-उधर फिरता रहा और अंत में गांव बोयल का अपना निवास बनाकर वहां रहने लगा। वहां भी राव मालदेव की सेना पहुंच गई, फिर वीरमदेव माण्डू के सुल्तान के पास चला गया। उसकी सलाह से रणथम्भौर के हाकिम के साथ बादशाह शेरशाह के पास दिल्ली पहुंच गया। वही वि.सं. 1598 में उसकी भेंट बीकानेर के राव जैतसी के छोटे पुत्र भीम से हुई। शेरशाह सूरी ने वि.सं. 1596 में हुमायूं को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। इन्हीं दिनों राव मालदेव ने टोकटोडे के सोलंकियों से दण्ड लिया और आगे बढ़कर सांभर, कासली, फतहपुर, रेवासा, उदयपुर (शेखावाटी), चाटसूं, लवाणा, मलारणा, जोनपुर (मेवाड़) इत्यादि लेकर उनमें अपने थाने कायम कर लिए। वि.सं. 1595 में मेवाड़ में महाराणा विक्रमादित्य को मारकर जब बणवीर ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया और विक्रमादित्य के छोटे भाई उदयसिंह को भी मारना चाहता था। उस समय वहां के सरदारों की प्रार्थना पर राव मालदेव ने उदयसिंह की रक्षा का भार लिया और वि.सं. 1598 को अपनी सेना सहित कूंपा और खींवकरण को भेजकर उदयसिंह को चित्तौड़ की गद्दी प्राप्त करने में सहायता की थी। राव मालदेव ने वि.सं. 1598 में राव जैतसी को मारकर बीकानेर के किले पर अधिकार किया था। वि.सं. 1599 में हुमायूं सिंध की ओर से राव मालदेव के पास सहायता प्राप्त करने के लिए आया था, राव ने उसका सत्कार किया, सहायता देने प्रतीज्ञा की। उन्हीं दिनों शेरशाह ने भी अपना वकील भेजकर राव मालदेव को अपनी और मिलाने का प्रयत्न किया था, पर बात नहीं बनी। तब वि.सं. 1600 में शेरशाह मालदेव पर आक्रमण करने लिए आमेर से मारवाड़ की ओर चल पड़ा। इसकी सूचना बीकानेर से कूंपा ने जो बीकानेर का प्रबंधक था, मालदेव को दी। इस पर मालदेव ने अपनी सेना तैयार की और अजमेर के पास बादशाह के सामने अपना मोर्चा लगाया। उस समय मारवाड़ के बहुत से राठौड़ जागीरदार इस युद्ध में यह कहकर शामिल हुए कि मारवाड़ हमारे पूर्वजों का अधिकृत प्रदेश है। हम किसी भी प्रकार बादशाह को इस पर अधिकार नहीं करने दें। मालदेव के पास बहुत बड़ी सेना हो गई और राठौड़ मरने-मारने के लिए तत्पर हो गए। इस पर शेरशाह सशंकित हुआ, अंत में शहशांह ने एक ऐसा षड्यंत्र रचा कि जिससे मालदेव को अपने सरदारों पर अविश्वास हो गया और वह वहीं से जोधपुर की ओर चला गया। जैता, कूंपा इत्यादि कई सरदार वहीं डटे रहे और शेरशाह की सेना से लड़कर अपने पूर्वजों की भूमि पर वीरगति को प्राप्त हुए। इसके बाद शेरशाह जोधपुर की ओर बढ़ा। मालदेव जोधपुर छोड़कर सिवाणा की ओर चला गया और शेरशाह का वि.सं. 1601 में जोधपुर पर अधिकार हो गया। इसके बाद वीरमदेव का मेड़ता और कल्याणसिंह का बीकानेर पर बादशाह ने अधिकार करा दिया। इस गिरी के युद्ध में मारवाड़ के बहुत से बड़े-बड़े वीर मारे गए जिनमें राठौड़ जैता, अखेराज, बगड़ी के ठाकुर, राठौड़ कूंपा, आसोप वालों के पूर्वज, राठौड़ खींवकरण उदावत रायपुर, नीमाज आदि के पूर्वज, राठौड़ पंचायण कर्मसोत, सोनगरा अखैराज, पाली के ठाकुर जैसा भाटी, नींबा लवेरा वालो के पूर्वज इत्यादि मुख्य थे। किले की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त करने वाले राठौड़ अचला शिवराजौत, राठौड़ तिलोकसी बरजांगोत, भाटी जैतमाल और भाटी शंकर की छतरियां अब तक किले में मौजूद है। वि.सं.1602 में कालिंजर में शेरशाह की मृत्यु हो जाने के उपरान्त राव मालदेव ने मारवाड़ पर अधिकार कर लिया। 15 मास तक जोधपुर पर बादशाह का कब्जा रहा। सर्वप्रथम वि.सं. 1603 में मालदेव ने भांगेसर के थाने पर अधिकार किया और बाद में बादशाही हाकिम को मारकर जोधपुर के किले पर अधिकार कर लिया। राव मालदेव ने जल्दी में वीरमदेव मेड़तिया से मेड़ता लेने और बीकानेर पर अधिकार करने में ऐसी भूल की जिससे वह अपने बड़े-बड़े वीरों को ही नहीं गंवा बैठा बल्कि जोधपुर राज्य से ही हाथ धो बैठा था। इस बीच में दूसरा अविवेकपूर्ण कार्य यह किया कि शेरशाह के षड्यंत्र का शिकार हो गया और सुमेल गिरी का मैदान छोड़कर चला गया। इससे मारवाड़ की जन-धन की तो हानि हुई ही, राव की स्वयं की साम्राज्यवाद विस्तार की योजना अवरुद्ध हुई। राव मालदेव ने फिर से अपनी योजना के कार्यान्वित करने में अग्रसर हुआ। वि.सं. 1604 में उसने नरा सूजावत के पुत्र हमीर से फलोदी छीनकर अपने राज्य में मिला लिया। वि.सं. 1605 में राठौड़ पृथ्वीराज जैतावत को अजमेर भेजा जिसने उस पर अधिकार कर लिया। वि.सं. 1605 में राठौड़ नगा और बीदा द्वारा मारवाड़ में उपद्रव करने वाले राठौड़ जैतमाल (नरा के पौत्र) से पोकरण छीना वि.सं. 1610 मेड़तिया वीरमदेव के पुत्र जयमल से मेड़ता छीन लिया। जयमल मेवाड़ चला गया और वहां उसे बदजोर की जागीर दी गई। इससे पहले वि.सं. 1609 में राव मालदेव ने मुसलमानों से जालोर ले लिया था। वि.सं. 1607 में राव ने गोडवाड़ पर विजय प्राप्त कर ली थी। वि.सं. 1609 में राव मालदेव ने बाड़मेर के स्वामी भीमा पर आक्रमण करके बाड़मेर व कोटड़ा पर अधिकार कर लिया। वि.सं. 1614 में रावजी ने पुराने मेड़ता को निर्मूल कर नया नगर बसाकर अपने नाम से वहां भालाकोट बनवाना प्रारम्भ किया, जो वि.सं. 1616 में बनकर तैयार हुआ उस भालकोट के थाने पर राठौड़ देवीदास जैतावत को रखा। वि.सं. 1618 में वीरमदेव मेड़तिया ने बाहरी सहायता से अपनी पैतृक भूमि मेड़ता पर अधिकार कर लिया। मगर जयमाल अधिक दिन नहीं रह सका और मेवाड़ चला गया। वि.सं. 1619 में कार्तिक सुदी 12 शनिवार को राव मालदेव का देहान्त हो गया उसके 25 रानियां थीं जिनसे 22 पुत्र हुए। 10 रानियां उसके साथ सती हुई जिनमें रूठी रानी उमादे भटियाणी भी थी। राव मालदेव महान वीर ही नहीं, बड़ा महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञ था। परन्तु हठीले स्वभाव का था। महाराणा सांगा के बाद यही एक ऐसा वीर राजपूत था कि दिल्ली की केन्द्रीय मुस्लिम शक्ति से लोहा लिया। यदि उस समय मारवाड़ में गृहकलह न होती और समस्त राठौड़ एक होकर मालदेव के नेतृत्व में इकट्ठे रहते और महाराणा सांगा की भांति आसपास के राजपूत शासक उससे मिल जाते तो कोई ताज्जुब की बात नहीं थी कि वह दिल्ली पर हाथ मारकर भारत के इतिहास को बदल डालता। यह अत्युक्ति नहीं है, मुस्लिम लेखकों तक मालदेव की प्रशंसा की है।

(1) राव मालदेव ने अपने तीस वर्ष के राज्यकाल में 52 युद्ध किए, अपने राज्य को सोजत और जोधपुर दो परगनों के क्षेत्र से बढ़ाकर 58 परगनों के क्षेत्र तक फैला दिया। (2) राव मालदेव ने अपना उत्तराधिकारी के रूप में स्वाभिमानी वीर राव चन्द्रसेन को चुना।

-सवाईसिंह बेलवा

सन्दर्भ ग्रन्थ :
1. राजपूताने का इतिहास - जगदीश सिंह पृष्ठ 229.
(2) मारवाड़ का इतिहास- आसोपा पृष्ठ 257.
(3) मारवाड़ का इतिहास रेऊ पृष्ठ-144.
(4) राठौड़ो राज्य का उदय और विस्तार पृष्ठ 157- भूरसिंह राठौड़ एवं डॉ. लक्ष्मणसिंह गडा।
(5) आइने अकबरी पृष्ठ-508.
(6) तुजुगे जगीरी पृष्ठ-7, 141.

जारी है हीरक जयन्ती के कार्यक्रम

संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान विभिन्न स्थानों पर हो रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला इस पक्ष में भी जारी रही। बालोतरा संभाग के कल्याणपुर समदड़ी प्रांत में सीमाड़ा बालाजी मंदिर कोटडी में संघ तीर्थदर्शन व स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन 13-14 अप्रैल को हुआ। 13 अप्रैल की शाम को प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में संघ कार्य की महत्ता और आवश्यकता पर चर्चा की गई। 14 अप्रैल को प्रातः प्रांतप्रमुख राण सिंह टापरा स्वयंसेवकों सहित खरंटिया पहुंचे जहां 1965 व 1991 में संघ के दो शिविर लग चुके हैं। यहां शाखा लगाकर उन शिविरों की स्मृति को जीवंत किया गया। 10:30 बजे यज्ञ के साथ मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। हिन्दू सिंह सिणेर ने हीरक जयन्ती वर्ष तथा तीर्थदर्शन अभियान की संक्षिप्त जानकारी दी। संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ संस्कृति, समाज और राष्ट्र के लिए संजीवनी का कार्य कर रहा है। हम सभी का यह दायित्व है कि हम इस संजीवनी को समाज के प्रत्येक अंग तक पहुंचाने में सहयोगी बनें। कोटेश्वर महादेव गुड़ानाल महंत स्वामी सत्यम गिरी जी, कान सिंह कोटडी (पूर्व विधायक) तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक अमर सिंह अकली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। कोटडी के अतिरिक्त इस कार्यक्रम में समदड़ी, सिवाणा, कल्याणपुर, बालोतरा, लूणी आदि क्षेत्रों से भी समाजबन्धु उपस्थित रहे। इसी प्रकार बाड़मेर के जैसलमेर रोड स्थित राजपूत छात्रावास में संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम तथा वीर विक्रमादित्य स्मृति दिवस का आयोजन 14 अप्रैल को किया गया। संभागप्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने वीर विक्रमादित्य के जीवन चरित्र से सभी को अवगत कराया तथा उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही। श्री राजपूत समाज सेवा समिति के अध्यक्ष कैप्टन हीर सिंह रणधा तथा उपस्थित समाजबंधुओं द्वारा विक्रमादित्य की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रांतप्रमुख महिपाल सिंह चूली ने कार्यक्रम का संचालन किया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के कोयल गांव में 12 अप्रैल को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में प्रान्त प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत 30 जुलाई को श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा की जयंती कातर में और 16 अगस्त को श्री राव चन्द्रसेन की जयंती लाडनूं में बड़े स्तर पर मनाई जाएगी। ऐसे अनेक कार्यक्रम देशभर में इस वर्ष आयोजित होंगे। ये सभी जयपुर में होने वाले मुख्य हीरक जयन्ती समारोह की भूमिका तैयार करेंगे। जय सिंह सागु बड़ी ने श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्यप्रणाली के संबंध में जानकारी प्रदान की। नरपत सिंह रताऊ ने संघ परिचय प्रस्तुत किया। लाडनूं सुजानगढ़ प्रान्त के खामियाद गांव में भी 14 अप्रैल को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां भी प्रांतप्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी तथा जयसिंह सागु बड़ी सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। गुजरात में बनासकांठा प्रान्त के अंतर्गत दांतीवाड़ा तहसील के गोगुदरा, ओढवा तथा कोटड़ा गांवों में 12 अप्रैल को संपर्क यात्रा रखी गई। प्रांतप्रमुख अजीतसिंह कुनघेर ने संपर्क यात्रा के दौरान समाजबंधुओं को हीरक जयन्ती वर्ष व तीर्थदर्शन अभियान के संबंध में जानकारी प्रदान की। गणपत सिंह आरखी व ईश्वर सिंह आरखी ने पूज्य तनसिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बताया। गोगुदरा गांव में शिविर के आयोजन पर भी चर्चा हुई तथा पथप्रेरक-संघशक्ति के ग्राहक सदस्य भी बनाये गये।

(पेज एक का शेष)

डरें नहीं... मैं इसी आधार पर यह घोषणा कर सकता हूं कि लोग बीमारी से कम, बीमारी के भय से अधिक मर रहे हैं। इसलिए डरें नहीं। अपनी ईच्छा शक्ति, मनोबल, आत्मबल बनाये रखें तो बीमारी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इसलिए आत्मबल बनाये रखें, सरकारों द्वारा दी गई सलाह को मानें, जानबूझकर अपने जीवन को संकट में न डालें।

सरकारें प्रयत्न कर रही हैं लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं और पर्याप्त हो भी नहीं सकते इसलिए स्वयं की शक्ति को, समाज की शक्ति को जगायें। प्रारंभ में जो डिस्टेंसिंग की बात की गई थी, वह धीरे धीरे भंग होने लगी। राजनीतिक पार्टियां रैलियां करने लगी, निर्देश देने वाले स्वयं निदेशों को भूल गये और लोगों की अवधारणा बनने लगी कि इनको भी नहीं हो रहा तो हमें भी कुछ नहीं होगा। इस प्रकार अनुशासन भंग होता गया, उनको भी अपने आचरण पर नियंत्रण रखना चाहिए था, हम भी रखें। विवाह आदि के लिए मिली छूट का लाभ उठाने का प्रयास न करें। बाजार आदि पर जो प्रतिबंध लगे हैं, उन्हें मानें। निश्चित रूप से इससे कठिनाई होगी लेकिन उन्हें सहें। नित्य कमाकर खाने वालों के संकट को सरकारें समझें एवं उनके लिए स्थानीय स्तर पर उपयुक्त व्यवस्था करें।

(पृष्ठ एक का शेष)

नई तरह... इसी कुत्सित मानसिकता के लोग इन दिनों हमारे इतिहास को विवादास्पद बनाकर उसे अन्य जातियों से जोड़कर यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि प्राचीन राजपूत वंश राजपूत नहीं थे बल्कि अन्य जातियों के थे। इसी क्रम में प्रतिहार आदि को गुज्जर बताया जा रहा है और इसके लिए यह तथ्य गढा जा रहा है कि प्रतिहार आदि गुर्जरात्रा क्षेत्र के शासक अपने नाम के साथ गुर्जर, गुर्जराधीश, गुर्जराधिपति आदि लगाते थे इसलिए वे गुज्जर थे। अभी तक ये प्रयास व्यक्तिगत या गुज्जर समाज की संस्थाओं के माध्यम से किया जा रहा था लेकिन अब एक नया प्रयोग हुआ है और शासकीय प्रमाण गढे जा रहे हैं। इसके लिए ही यह प्रयोग गुजरात में किया गया है और यही है नई तरह का गुजरात मॉडल। गुजरात में लगभग 25 वर्षों से भारतीय जनता पार्टी का शासन है। उस भारतीय जनता पार्टी का जिसकी जड़ों का सींचन करने के लिए राजपूतों ने अनथक परिश्रम किया। यदि गुजरात की बात करें तो यहां राजपूत समाज के अग्रणी नेता रहे पूज्य हरिसिंह जी बापू गढुला जनसंघ के अग्रणी नेता थे। वे हर चुनाव में नये क्षेत्र से चुनाव केवल इसलिए लड़ते थे ताकि उस क्षेत्र में जनसंघ का विचार लोगों तक पहुंचे और वहां स्वतंत्र टीम बने। ऐसे समर्पित लोगों के निस्वार्थ समर्पण से बनी भाजपा उसी गुजरात में लोकसभा चुनावों में राजपूत समाज को एक अदद टिकट देना भी आवश्यक नहीं समझती लेकिन फिर भी राजपूत समाज भाजपा के देश, धर्म और संस्कृति के नारे का सम्मान करते हुए उस पार्टी का बिना शर्त समर्थन करता है और उसी भाजपा की सरकार में राजपूतों के स्थापित इतिहास पर शासकीय तरीके से हमला होता है। क्या यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है? यदि यह वहाँ के राजनीतिक नेतृत्व की जानकारी में हो रहा है तो अत्यंत आपत्तिजनक है और तब क्या ऐसा नहीं माना जाना चाहिए कि पूरे देश में चल रहे ऐसे प्रयासों के पीछे भी ये ही शक्तियां कार्यशील हैं? यदि यह राजनीतिक नेतृत्व की जानकारी के बिना हो रहा है तो भी गंभीर प्रश्न है कि किसी लोकतांत्रिक सरकार में वहाँ का तंत्र ऐसे वर्ग विशेष के प्रति दुर्भावनापूर्ण रूप से काम करे जो संबंधित राजनीतिक नेतृत्व का सदा से समर्थक रहा हो। इसी विषय को लेकर श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 26 अप्रेल को गुजरात के मुख्यमंत्री को एक पत्र लिख कर मेल किया है। समाज के हजारों लोग अपने अपने मेल एड्रेस से उस पत्र को मेल कर सरकार तक अपनी आपत्ति प्रेषित कर रहे हैं।

संपादकीय

राष्ट्र और धर्म

राष्ट्र शब्द का वास्तविक अर्थ तो एक पहचान होती है जो किसी एक भाषा, इतिहास, रहन- सहन, पहनावा, संस्कृति आदि से संबद्ध होती है। मूलतः 'राजृ' धातु में 'ष्ट्रन्' प्रत्यय लगने से राष्ट्र शब्द बनता है जिसका अर्थ है विविध संसाधनों से समृद्ध सांस्कृतिक पहचान वाला देश ही एक राष्ट्र होता है। यहां देश शब्द इसे एक भौगोलिक सीमा में भी बांध देता है। भौगोलिक सीमा आते ही राष्ट्र शब्द राजनीति से जुड़ जाता है और यहाँ राज्य और राष्ट्र समानार्थी भी हो जाते हैं। लेकिन फिर भी यह स्पष्ट है कि राज्य राष्ट्र नहीं होता। अनेक लोग भौगोलिक एकता, राजनीतिक एकता और सांस्कृतिक एकता को राष्ट्र शब्द की परिभाषा में शामिल करते हैं। उपरोक्त समस्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्र और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता, राष्ट्र और राज्य में भी प्रभावी संबंध है और देश (भौगोलिक सीमाएं) भी राष्ट्र की अनिवार्य अंग हैं। इजरायल बनने से पूर्व भले ही भावनात्मक रूप से यहुदी अपने आपको राष्ट्र मानते रहे हों लेकिन व्यवहारिक रूप से तो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ही उनका एक राष्ट्र के रूप में आविर्भाव हुआ। इस प्रकार राष्ट्र एक भौतिक अवधारणा है, इस संसार की अवधारणा है, एक राजनीतिक अवधारणा है। राष्ट्र में राज्य, देश और संस्कृति तीनों समाये हुए हैं। धर्म राष्ट्र से इतर अवधारणा है, राष्ट्र से विस्तृत अवधारणा है। जिस प्रकार एक राष्ट्र में राज्य, देश और संस्कृति समाये हुए होते हैं उसी प्रकार धर्म में राष्ट्र समाया हुआ होता है। राष्ट्र जहां भौतिक संसार का शब्द है वहीं धर्म संसार को उसके उद्गम से जोड़ने वाला शब्द है। इस प्रकार धर्म में संसार भी है और संसार के पार भी। यह क्षर को अक्षर से जोड़ने की अवधारणा है, अनित्य को नित्य से जोड़ने वाली अवधारणा है। यही धर्म की उपयुक्त परिभाषा है। धर्म परिवार छोड़ने वाला संन्यास नहीं है बल्कि सम न्यास वाला संन्यास है। उस सम न्यास के लिए धर्म एक प्रक्रिया उपलब्ध करवाता है जिसे धारण कर व्यक्ति संसार के बीच से होकर संसार को पार करता है। धर्म निश्चित रूप से व्यष्टि और परमेष्टि के बीच का विषय है पर हमारी संस्कृति ने इसे समष्टि के माध्यम से ही स्वीकार किया है इसलिए हमारे यहाँ धर्म व्यक्तिगत विषय नहीं रहा बल्कि सामाजिक विषय बन गया। यहां व्यक्ति और परमेश्वर के बीच समाज सदैव उपस्थित रहा इसलिए हमारे यहाँ धर्म की परिभाषा बनी कि जो हमें धारण करता है वह धर्म है। जिसके द्वारा धारण किए जाने के पश्चात हमारे जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है, वह धर्म है। हम धर्म के प्राथमिक स्वरूप यथा प्रतीक पूजा आदि में ही उलझे रहने के कारण इस वास्तविक परिभाषा तक पहुंच ही नहीं पाते और परिणाम स्वरूप धर्म के वास्तविक स्वरूप को भी समझ नहीं पाते। ऊपरी तौर पर धर्म की परिभाषा करने वालों ने राष्ट्र को धर्म से बड़ा घोषित कर दिया और राष्ट्रधर्म को स्वधर्म से बड़ा घोषित कर दिया। यह एक विकृत अवधारणा है। यदि राष्ट्र ही धर्म का स्वरूप है तब तो शकुनि भी उतना ही अधिक धार्मिक है जितने पितामह भीष्म। क्योंकि पितामह भीष्म भी राष्ट्र के लिए लड़ रहे थे और शकुनि भी भीष्म द्वारा अपने अंधे पौत्र का विवाह गांधारी से करने के लिए गांधार नरेश को विवश करने का बदला ले रहा था। वह भी अपने राष्ट्रीय स्वाभिमान के हत होने से अपमानित था और उस अपमान का अपने तरीके से बदला ले रहा था। लेकिन राष्ट्र को ही धर्म मानने वाले लोग क्या शकुनि को अपना आदर्श मानते हैं? लेकिन धर्म के लिए अपना संपूर्ण जीवन लगाने वाले भगवान श्री कृष्ण को हम सब हमारा आदर्श मानते हैं। भगवान श्री कृष्ण के धर्म में राष्ट्र समाया हुआ था लेकिन पितामह भीष्म और शुकनिके राष्ट्र में धर्म नहीं था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राष्ट्र स्वधर्म से बड़ा नहीं है। राष्ट्र जहाँ भौतिक अभ्यूदय का प्रतीक है वहीं स्वधर्म का पालन भौतिक और आध्यात्मिक दोनों अभ्यूदय को चरितार्थ करता है। यदि हम हमारे स्वधर्म 'क्षात्र धर्म' की बात करें तो हमारे पूर्वजों ने अपने इस स्वधर्म का पालन कर अपना ही नहीं बल्कि अपने से संबंधित सभी पक्षों का सर्वांगीण अभ्यूदय किया। यदि एक क्षत्रिय अपने स्वधर्म पर आरूढ होता है तो परमेश्वर के मंगलमय विधान में सहायक होकर उनकी कृपा का पात्र बनता है जो मनुष्य मात्र के जीवन की सार्थकता का आदर्श परिणाम है। यदि वह अपने स्वधर्म पर आरूढ होता है तो उसकी प्रजा उसके लिए समस्त सुविधाएं जुटा कर उसके भौतिक जीवन के अभ्यूदय की अनुकूलता कृतज्ञता पूर्वक उपलब्ध करवाती है। यदि वह अपने स्वधर्म पर आरूढ होता है तो उस भौगोलिक प्रदेश का स्वतः अभ्यूदय होता है जहाँ उसका निवास होता है। उसके अपने स्वधर्म पर आरूढ़ होने से उस क्षेत्र में व्यवस्था पनपती है, लोग अपने जीवन के समस्त व्यापारों का भली प्रकार संचालन करते हैं और परिणाम स्वरूप उनका भी अभ्यूदय होता है। उस क्षेत्र की समस्त सांस्कृतिक क्रियाएं सहजता से संपन्न होती हैं और अपसंस्कृति का नाश होता है। इस प्रकार क्षत्रिय के अपने स्वधर्म पालन से राष्ट्र की परिभाषा में शामिल सांस्कृतिक, भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियां सम्यक हो जाती हैं और साथ ही जीवन का मूल लक्ष्य भी स्वभाविक भाव से सहज ही सधता है। संबंधित व्यक्ति सम न्यास को प्राप्त होकर अपने उद्गम की ओर अग्रसर होता है। इस विवेचन से सिद्ध होता है कि धर्म राष्ट्र से कहीं बड़ी अवधारणा है, राष्ट्र धर्म में समाया हुआ है। पूज्य तनसिंह जी ने इसीलिए अपनी पुस्तक 'एक भिखारी की आत्मकथा' में लिखा कि 'राष्ट्र प्रेम मेरा एकमात्र धर्म नहीं, यद्यपि वह भी मेरे धर्म का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। मेरे महान धर्म में राष्ट्रभक्ति का सम्पूर्ण रूप से समावेश है।' हमारे लिए यह जानने का विषय है, सोचने व समझने का विषय है, अनुकरणीय विषय है और आचरणीय विषय है। यह विषय हमारे में इस बात का आत्मविश्वास भरता है कि हमारे स्वधर्म की बात तथाकथित राष्ट्रवाद से कहीं अधिक विस्तृत अवधारणा है और उससे कहीं श्रेष्ठ अवधारणा है। यह हमारे भारत की अपनी अवधारणा है जिसे हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों ने चरितार्थ कर इस राष्ट्र को अग्रगण्य बनाया था। तथाकथित राष्ट्रवादियों के चंगुल में आकर हम क्षत्रियत्व की बात को आत्मलघुता न समझें बल्कि यह हमें देश, काल और परिस्थितियों से मुक्त कर सर्वांगीण अभ्यूदय करने वाली अवधारणा है जिसमें राष्ट्र का समावेश प्रचलित राष्ट्रवाद से कहीं अधिक है। हमारे स्वधर्म में मौजूद राष्ट्र केवल राजनीतिक प्रपंच मात्र नहीं है, सत्ता हासिल करने का साधन मात्र नहीं है बल्कि वह अपने संपूर्ण अभ्यूदय की योजना सहित शामिल है। हमें तथाकथित मानववाद, समाजवाद आदि प्रपंचों में भी फंसने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे सब भी एक पक्षीय दृष्टिकोण हैं और उनका वह पक्ष भी हमारे स्वधर्म में संपूर्णता के साथ मौजूद है। हमें पूज्य तनसिंह जी के प्रति कृतार्थ होना चाहिए कि उनकी कृपा से हमें हमारे धर्म की युगानुकूल अवधारणा उपलब्ध हुई, उस अवधारणा को चरितार्थ करने का मार्ग उपलब्ध हुआ और उस मार्ग पर आरूढ करने वाले मार्गदर्शक उपलब्ध हुए। अब चलना शेष रहता है और वह हमारे पुरुषार्थ का क्षेत्र है। उसका एक मात्र उपाय हमारा पुरुषार्थी बनना ही है और ऐसे पुरुषार्थी लोगों का श्री क्षत्रिय युवक संघ सदैव पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत करने को तत्पर रहता है, क्या हम उन सौभाग्यशाली लोगों में शामिल हो सकते हैं जिनको ऐसा स्वागत उपलब्ध हो।

खरी-खरी

दुर्भाग्य का दौर, दोषी कोई और

संपूर्ण राष्ट्र कोरोना महामारी के बूरे दौर से गुजर रहा है। मरीजों की संख्या के सभी रिकोर्ड्स ध्वस्त हो रहे हैं। अस्पताल में नो बैड की स्थिति है। शमशानों में लाशों की पंक्तियां लगी हैं। अस्पतालों के बाहर मरीजों की पंक्तियां हैं। ऐसे ही अनेक दुर्भाग्यशाली समाचार हम विगत दिनों से लगातार समाचार माध्यमों में देख सुन रहे हैं। इन्हीं समाचारों में हमें ऐसे समाचार भी पढ़ने को मिल रहे हैं कि जिस दिन देश में 2 लाख मरीज आये उस दिन दो गज दूरी का संदेश देने वाले हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी प. बंगाल में हजारों की भीड़ एकत्र कर चुनावी संबोधन दे रहे थे। हमें ऐसे भी समाचार पढ़ने को मिले की राष्ट्र प्रथम का नारा देने वाले तथाकथित राष्ट्रवादियों की सरकार ने 76 देशों को कुल 6 करोड़ टीके भेजे जिनमें अधिकांश भेंट स्वरूप दिए गये। हमने यह भी जाना कि इस दौर में अन्य सभी देश टीके ही नहीं बल्कि टीकों के निर्माण में उपयोग होने वाली सामग्री का भी निर्यात रोक कर पहले अपने देश की आवश्यकताएं पूरी कर रहे थे तब हमारी सरकार के मुखिया अपनी विश्वनेता बनने की भूख को शांत करने को टीके बाहर भेज रहे थे। कोरोना का बूरा दौर आने तक हम उस समय तक कुल निर्मित टीकों का 30 प्रतिशत बाहर भेज चुके थे जबकि हमारे देश की आबादी के मात्र 1% का ही टीकाकरण हो पाया था। हमने समाचार माध्यमों में ऐसी अनेक फोटो भी देखे जब 'नो मास्क नो एंट्री' और 'नो मास्क नो मूवमेंट' का नारा देने वाली राज्य सरकार के मंत्री एवं मुखिया उप चुनावों में बिना मास्क घूम ही नहीं रहे थे बल्कि सैंकड़ों हजारों की भीड़ से संवाद कर रहे थे। जब अति संक्रमित राज्यों से निर्बाध गति से आ रहे प्रवासियों को रोककर उनकी जांच करने और उन्हें क्वारंटीन कर निगरानी में रखने की आवश्यकता थी तब हमारी सरकारें केवल बयान देकर या आदेश निकाल कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर उपचुनाव कैसे जीतें इसकी जुगाड़ बैठाने में व्यस्त थे।

हमने समाचारों में यह भी पढ़ा की महाराष्ट्र सरकार ने इस कठिन दौर के समय स्वास्थ्य कर्मियों के पद घटा दिए। उत्तरप्रदेश में अस्थाई अस्पताल ही बंद कर दिए गये। मध्यप्रदेश में 37 आक्सीजन प्लांट लगने थे पर तीन ही लगे और राजस्थान के जोधपुर के तीनों बड़े अस्पतालों में तीन माह पहले स्वीकृत हुए आक्सीजन प्लांट का प्लेटफार्म भी नहीं बन पाया। हमने यह भी जाना कि पंजाब में बाहर से आने वालों की जांचे ही बंद कर दी गईं और गुजरात में सत्तारूढ़ पार्टी सरकारी तौर पर रेमडेसिविर का वितरण बंद कर अपने प्रदेश अध्यक्ष के घर से रेमडेसिविर इंजेक्शन बंटवा रही थी। ऐसी ही अनेक दुर्भाग्यशाली खबरें हमें इस दौर में सुनने और पढ़ने को मिली और लगातार मिलती जा रही हैं। आखिर कौन दोषी है? क्या कांग्रेस दोषी है या भाजपा दोषी है? राज्य सरकारें दोषी हैं या केन्द्र सरकारें दोषी हैं? हम कितने ही संश्लेषण विश्लेषण कर लें, सभी प्रकार की समीक्षा कर लें। अंत में यही पायेंगे कि हमारा दुर्भाग्य दोषी है कि हम उस दौर में पैदा हुए हैं जिस दौर में इस देश और प्रदेश में ऐसा गैरजिम्मेदार राजनीतिक नेतृत्व है जिसमें दूरदर्शिता का नितांत अभाव है। जिसकी कथनी और करनी का एक मात्र लक्ष्य शासन चलाना नहीं बल्कि शासन हासिल करना है। जिसको नेतृत्व के रूप में मिलने वाले विशेषाधिकार तो आकर्षित करते हैं पर नेतृत्व करने वाले के महान दायित्वों से जिसका दूर दूर तक वास्ता नहीं है और जिसमें उन दायित्वों के बारे में सोचने का भी माद्दा नहीं है। यह सब एक दिन में नहीं हुआ है, कुछ वर्षों की प्रक्रिया का परिणाम नहीं है बल्कि लंबे समय से चल रहे अपसंस्कृतिकरण का परिणाम है। यह अपसंस्कृतिकरण मतदाताओं और नेताओं सबका हुआ है इसीलिए कुएं में भांग पड़ी नजर आ रही है। लगभग एक पूरी सदी से इस देश में अधिकारों के लिए संघर्ष की बात की जा रही है, अधिकारों के लिए जागरुकता अभियान चलाये जा रहे हैं और दायित्व की बात निरंतर नैपथ्य में जाते जाते अब शुन्य की स्थिति तक पहुंच गई है। यहां सबसे बड़ा अधिकार राजनीति को माना गया, उसके लिए योग्यता के नाम पर केवल कुछ अधिक लोगों का समर्थन ही एक मात्र योग्यता रखी गई और अधिकारों की भूख जगाकर सामान्य बुद्धिलब्धि की जनता को कुछ तात्कालिक भौतिक सुविधाएं उपलब्ध करवा कर ऐसा करना कोई कठिन काम नहीं है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

समय को... उन्होंने उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के जिस शासक के लिए अरब का लेखक यह कहें कि विक्रमादित्य के शासन में शासित होने का सौभाग्य पाकर वे गौरवान्वित है तो ऐसे शासक की महानता स्वयं ही सिद्ध हो जाती है। हमारे ऐसे महान पूर्वजों ने ही हमारी कौम के तेज को बनाये रखा है। वे हमारी जाति के गगन में चंद्रमा की भांति प्रकाशित हुए जिनसे पूरे संसार ने शीतलता पाई। उनकी महानता के कारण ही उनके नाम से विक्रम संवत का प्रारंभ हुआ। हमारे ऐसे पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और उनसे प्रेरणा प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है। वे हमारी कौम की धरोहर और हमारे गौरव हैं किंतु उस धरोहर की, उस गौरव की कीमत भी चुकानी पड़ती है। हम अपना अन्तरावलोकन करें कि क्या हम वह कीमत चुका रहे हैं? संघ इसी अन्तरावलोकन की प्रवृत्ति को समाज में जगाने का प्रयत्न कर रहा है। कार्यक्रम को गंगासिंह परमार (पूर्व प्रशासनिक अधिकारी), बाघसिंह पुनग (पंचायत समिति सदस्य), भेरूपाल सिंह कोलर, राजेन्द्र सिंह आकोली ने भी संबोधित किया तथा विक्रमादित्य के जीवन और शासन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए उनकी महानता को नमन किया। संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने कार्यक्रम की भूमिका एवं हीरक जयंती वर्ष के कार्यक्रम की जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान ही परमार वंश की कुलदेवी कुलटी माता सभा स्थल पर वीर विक्रमादित्य की मूर्ति का अनावरण भी किया गया। इसी प्रकार बाड़मेर शहर प्रान्त में श्री जय भवानी छात्रावास, गांधीनगर में भी वीर विक्रमादित्य स्मृति समारोह का आयोजन किया गया। संभाग प्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि विक्रमादित्य की महानता का जीवंत प्रमाण उनकी स्मृति में प्रारम्भ हुआ विक्रम संवत है जो भारतीय काल गणना का मुख्य आधार है। उन्होंने विदेशी आक्रांताओं से देश की रक्षा की तथा अपना साम्राज्य अरब तक फैलाया। ऐसे महान शासक का जीवनवृत्त हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। हमारे महापुरुषों के चारित्रिक गुणों को हमारे जीवन का अंग बनाने की साधना ही श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। यदि हम अपनी कौम के रत्नों को भुला देंगे तो लोग उन पर उसी भाँति अधिकार जमा लेंगें जिस प्रकार सूने पड़े भूखंडों पर कोई भी अधिकार कर लेता है। प्रांतप्रमुख महिपाल सिंह चूली सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी प्रकार चौहटन स्थित श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में भी विक्रमोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। संभागप्रमुख कृष्ण सिंह राणीगांव के साथ प्रांतप्रमुख उदय सिंह देदूसर तथा महिपाल सिंह चूली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे तथा उपस्थित समाजबंधुओं को विक्रमादित्य के जीवनवृत्त के साथ ही संघ के हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में भी जानकारी प्रदान की गई। गुड़ामालानी प्रान्त के बूठ गांव में भी वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह जी गेहूं की उपस्थिति में वीर विक्रमादित्य स्मृति समारोह का आयोजन हुआ। उन्होंने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि वीर विक्रमादित्य जैसे हमारे पूर्वजों के चरणचिह्न इस देश की संस्कृति और इतिहास के चप्पे-चप्पे पर मौजूद है। इसी संस्कृति के लिए हमारे पूर्वजों ने अचिन्त्य बलिदान किए हैं, इसलिए इसकी रक्षा हम सबका कर्त्तव्य है। स्वयं को संस्कारित करके ही हम संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं और संघ के शिक्षण से ही समाज को संस्कारित किया जा सकता है। बाबू सिंह बूठ, मल्लसिंह उण्डखा व गणपत सिंह बूठ ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। शिव प्रान्त के भिंयाड़ गांव स्थित मातेश्वरी शाखा मैदान में भी सम्राट विक्रमादित्य स्मृति समारोह आयोजित किया गया जिसमें प्रान्त प्रमुख राजेन्द्र सिंह भिंयाड़ सहयोगियों व समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। उन्होंने वीर विक्रमादित्य के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की और संघ की हीरक जयन्ती के सम्बंध में चर्चा की।

भियाड़

(पृष्ठ चार का शेष)

दुर्भाग्य का... कोई भी कुटिल व्यक्ति ऐसा आसानी से कर लेता है और इसीलिए नेता बनने की एक मात्र योग्यता केवल चुनाव जीतने की क्षमता को ही माना गया। राजनीति हमारी भारतीयता में कांटों का बिस्तर माना जाता था और उसके लिए त्याग और बलिदान को आवश्यक समझा जाता था लेकिन पिछली एक सदी में राजनीति को सर्वोच्च अधिकार के रूप में प्रचारित किया गया, समस्त भोगों का एकमात्र साधन बताया गया और इसे हासिल करना ही सबसे बड़ी उपलब्धि बताया गया। ऐसे में अपने शरीर, इंद्रियों, मन और बुद्धि को संतुष्ट करने को लालायित लोगों ने येन केन प्रकारेण सत्ता को हासिल करने का अभियान चलाना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ समझा है। इसीलिए तो प्रधानमंत्री जी के लिए अतिसंक्रमण वाली बीमारी के दौर में भी रैलियां करना जरूरी था, उत्तरप्रदेश सरकार अस्पतालों की अपेक्षा पंचायती चुनाव में व्यस्त थी, राजस्थान सरकार उपचुनावों का प्रचार थमने तक सक्रिय नहीं हुई। प्रमुख विपक्षी पार्टी इस आपदा में स्वयं के लिए प्राणवायु जुटाने का अवसर ढूंढ रही है। हर तरफ गैरजिम्मेदार लोगों की गैरजिम्मेदारी प्रकट हो रही है। जनता गैरजिम्मेदारी पूर्वक सुपर स्प्रेडर बनकर घूम रही है और नेता गैरजिम्मेदारी पूर्वक अपनी अकर्मण्यता को छिपाने का तर्क ढूंढ रहे हैं। नेताओं के अनुयायी अपने नेताओं के आभा मंडल में हो रहे छेदों को लेकर परेशान हैं और उन छेदों को पाटने के लिए नित नये तर्कों के साथ उपस्थित हो रहे हैं। ऐसे दुर्भाग्य के दौर में एक मात्र दीर्घकालिक और स्थायी उपाय उसी त्याग और बलिदान की संस्कृति की ओर लौटना है जहां सत्ता अधिकार नहीं दायित्व हुआ करती थी। जो अधिकारों का जागरण नहीं करती बल्कि दायित्वों का आभास कराती है और उस ओर लौटने के लिए लंबे समय तक धैर्यपूर्वक साधना की आवश्यकता है। आलोचनाओं और प्रशंसा से अप्रभावित रहते हुए निरंतर कर्मशील रहने की आवश्यकता है। लगभग एक सदी से जो अधिकारों की भूख ही सर्वोच्च भूख बन गई है उसे दायित्वों की भूख में बदलने के लिए एक सदी तक नहीं बल्कि सदियों तक अनथके पुरुषार्थ की आवश्यकता है और पूज्य तनसिंह जी कृपा से हमें ऐसा मार्ग उपलब्ध हुआ है। हमें यह तय करना है कि हम इस मार्ग को राजमार्ग बनने में योगदान देकर भविष्य के भारत को सौभाग्यशाली बनाना है या दुर्भाग्य के इस दौर को ही जारी रखना है। यदि हम इसी दौर को जारी रखना चाहते हैं तो दोषी और कोई नहीं, हम ही हैं। यदि यह समझ पैदा नहीं हुई तो हम भी राजनेताओं की तरह यही कहेंगे कि दोषी कोई और है।

मालवा का परमार वंश

भोज ने 1010 ईस्वी से 1060 ईस्वी तक शासन किया। भोज की मृत्यु के साथ ही मालवा के परमार वंश के सुयोग्य शासकों की श्रृंखला का अंत हो गया। भोज के बाद उसका पुत्र जयसिंह शासक बना। भोज के शासन काल के अंतिम समय में मालवा पर शत्रुओं का आक्रमण हुआ। भोज की मृत्यु के बाद धारा नगरी पर चेदी नरेश कर्ण का अधिकार हो गया था। जयसिंह ने कल्याणी के शासक सोमेश्वर प्रथम के पुत्र विक्रमादित्य से सहायता प्राप्त कर अपनी राजधानी को शत्रुओं से मुक्त करा लिया। जब सोमेश्वर प्रथम के बाद जब कल्याणी का शासक सोमेश्वर द्वितीय बना तो स्थिति बदल गई, उसने चेदी नरेश कर्ण के साथ मिलकर मालवा पर आक्रमण किया। जयसिंह ने रणक्षेत्र में शत्रुओं का वीरता के साथ मुकाबला किया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ। शत्रुओं ने धारा नगरी को लूटने के बाद ध्वस्त कर दिया। जयसिंह के बाद उदयादित्य मालवा का शासक बना। उसने शासन बनते ही चेदी नरेश कर्ण के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया परन्तु प्रारम्भ में उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। कर्ण का मुकाबला करने के लिए उसने मेवाड़ के गुहिलोत, नाडौल तथा शाकम्भरी के चौहानों का सहयोग प्राप्त किया जिसमें शाकम्भरी के चौहान शासक विग्रह राज का सहयोग उल्लेखनीय रहा, उदयादित्य ने कर्ण को पराजित कर अपनी राजधानी को मुक्त करा लिया। इसके उपरान्त उदयादित्य ने कुछ समय तक शान्तिपूर्वक शासन किया तथा राजधानी धारा नगरी का पुनद्धार किया। उसने मिलसा के पास उदयपुर नामक नगर बसाया तथा वहां नीलकण्ठ के मंदिर का निर्माण करवाया। उदयादित्य विद्यानुरागी व विद्वानों का आश्रयदाता शासक था। स्वामी भक्ति के लिए इतिहास प्रसिद्ध पाटन के शासक सिद्धराज जयसिंह का सामन्त जगदेव परमार इसी उदयादित्य का पुत्र था। उदयादित्य के बाद उसका बड़ा पुत्र लक्ष्मणदेव शासक बना। नागपुर से प्राप्त उसके लेख से उसकी उपलब्धियां के बारे में पता चलता है इस समय बंगाल के निर्बल पाल शासकों की दुर्बलता का लाभ उठाते हुए लक्ष्मणदेव ने बंगाल तथा बिहार के कुछ प्रदेशों पर अधिकार कर लिया, उसने कलचुरी नरेश यशकर्ण को भी पराजित किया। लक्ष्मणदेव के बाद उसका छोटा भाई भर वर्मा शासक बना जिसका शासन काल सांस्कृतिक दृष्टि से उल्लेखनीय रहा, वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों का आश्रयदाता भी, उसने निर्माण कार्यों में भी रुचि ली और अनेक तालाबों और मंदिरों का निर्माण करवाया। इसके उपरान्त अगले 100 वर्षों में मालवा पर अनेक शासकों का छोटे-छोटे काल के लिए शासन रहा, ये सभी शासक अयोग्य और निर्बल शासक थे। चौदहवीं सदी के प्रारम्भ में मालवा के परमार वंश की शासन सत्ता का अंत हो गया। **(क्रमशः)**

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखामृत

15 मार्च को 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और कौटुंबिय प्रणाली' विषय पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि पश्चिम की संस्थाएं व्यक्ति के व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन को अलग अलग मानती है लेकिन संघ ऐसी संस्था नहीं है। संघ पारिवारिक भाव पर आधारित संस्था है जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ का कोई महत्त्व नहीं है। आज के समय में खंडित हो रहे परिवारों में पारिवारिक भाव नष्ट होता जा रहा है इसलिए नई पीढ़ी में इस भाव की स्थापना अत्यंत कठिन हो गई है। इसके लिए संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा व्यावहारिक प्रशिक्षण समाज के युवाओं को प्रदान कर रहा है। संघ के शिविरों में घट, पथक आदि व्यवस्थाएं तथा श्रम, सेवा जैसे अभ्यास द्वारा शिविरार्थी के जीवन में सच्चे पारिवारिक भाव का सूत्रपात किया जाता है। स्वयंसेवक द्वारा परिवार, समाज के अन्य सदस्यों के हित के लिए अपनी सुविधा का त्याग करना संघ के शिक्षण में स्वाभाविक रूप से सीख लिया जाता है। आज हम देख रहे हैं कि समाज और परिवार में विघटन निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे में संघ द्वारा कौटुंबिय प्रणाली पर आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से ही परिवार तथा समाज में आधारभूत एकता की स्थापना हो सकती है। 22 मार्च को 'श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं में शिक्षण' विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि साधारणतया शाखा में प्रार्थना, सहगीत, खेल, चर्चा आदि गतिविधियां होती है। चर्चा का विषय खेल, सहगीत अथवा संघ साहित्य का कोई अंश होता है। शिविरों में होने वाली चर्चा शाखा की तुलना में अधिक विस्तृत होती है। कुछ शाखाओं में विशिष्ट प्रकार की चर्चाएं भी होती है। संघ साहित्य पर शाखाओं में जो चर्चा होती है वह व्यक्तिगत अध्ययन की अपेक्षा अधिक गहरी समझ विकसित करती है। संघमार्ग पर सबसे महत्त्वपूर्ण साधन आत्मचिन्तन और आत्मनिरीक्षण है और इन गुणों को विकसित करने में इस प्रकार की चर्चाएं अधिक उपयोगी है। चर्चा में हमारे भीतर के अनेकों संदेह दूर हो जाते हैं और हमें अधिक स्पष्ट दृष्टि प्राप्त होती है। मार्ग पर चलते हुए आने वाली निराशा को भी यह स्पष्टता दूर कर देती है। बल्लूजी चंपावत का वृत्तांत सुनाते हुए उन्होंने कहा कि हम भी समाज के प्रति अपने ऋण को चुकाने के लिए उसी प्रकार हमारे घर बैठे बंधुओं का विकल्प बनेंगे तभी समाज की आवश्यकता पूरी हो सकेगी। 29 मार्च को 'संघ में अभ्यास और वैराग्य' विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संघ संस्कार निर्माण का कार्य करता है। संस्कार निर्माण का अर्थ है कि हम जिस प्रकार का हमारा स्वभाव विकसित करना चाहते हैं उसके लिए आवश्यक बातों का बार बार अभ्यास किया जाए। संघ में खेलों आदि गतिविधियों के माध्यम से अनुशासन, कष्ट सहिष्णुता जैसे गुणों का अभ्यास कराया जाता है। भोगों के प्रति, सुविधा के प्रति, शरीर के प्रति हमारे राग का खंडन भी संघ में स्वाभाविक रूप से होता है। इस प्रकार वैराग्य और अभ्यास संघ का मूल तत्व है। आज संसार में सभी राग में मस्त हो रहे हैं। पदार्थों के क्षणभंगुर आनंद में डूबे हुए समाज को वैराग्य के शिक्षण की आज अत्यधिक आवश्यकता है। भोग की अपेक्षा कर्त्तव्यपालन के आनंद का प्रसार समाज में हो, यही संघ का प्रयास है। इसी प्रकार 5 अप्रैल को 'श्री क्षत्रिय युवक संघ और सेवा' विषय पर चर्चा में उन्होने कहा कि संघ द्वारा दिए गए अष्टसूत्री कार्यक्रम में शुद्धि, संध्या, श्रम, सेवा, स्वाध्याय, चिंतन-मनन, मौन और समाधि सम्मिलित है। सेवा आचरण का विषय है। सेवाकार्य अत्यंत कठिन और गहन है। प्रभु की सेवा श्रेष्ठतम सेवा है क्योंकि इसमें सम्पूर्ण संसार की सेवा निहित है। परमात्मा की सेवा करने के लिए उसके अर्थ को गहराई से समझना होगा। सामान्य मनुष्य की सेवा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग करके की जा सकती है लेकिन परमात्मा की सेवा का अर्थ है सत्य सेव्य की निस्वार्थ भाव से की गई सेवा। समाज भी परमात्मा का ही स्वरूप है और उसकी सेवा ईश्वर की सेवा ही है। इसलिए संघ कार्य परमात्मा की सेवा का ही मार्ग है। 12 अप्रैल को 'प्रज्ञा और करुणा का संगम - क्षत्रिय' विषय पर अपने उद्बोधन में उन्होंने आचार्य रजनीश द्वारा वर्णों के गुणधर्म की व्याख्या के बारे में बताते हुए कहा कि क्षत्रिय ही तीर्थंकर या अवतार हो सकता है इसका कारण यह है कि वह अंतर्जगत और बाह्यजगत दोनों में उतरने की क्षमता रखता है। उसके पास अपने भीतर उतरकर अपने वास्तविक स्वरूप को तत्त्वरूप में जान लेने वाली प्रज्ञा भी है और बाह्य जगत में अन्यों को कल्याण के मार्ग पर लाने के लिए प्रेरित करने वाली करुणा भी है। प्रज्ञा और करुणा का यह अनूठा संगम ही क्षत्रिय को विशेष बनाता है। उसकी रजशक्ति उसके अंतर्ज्ञान को बाह्य संसार में बांटने की क्षमता प्रदान करती है। क्षत्रिय में बहिर्मुखता और अंतर्मुखता एक साथ विद्यमान है जो अन्य किसी वर्ण में नहीं है। यही कारण है कि ईश्वर ने भी अपने अवतरण के लिए सदैव क्षत्रिय को ही चुना है। 18 फरवरी को पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'वो कौम न मिटने पायेगी' के अर्थ पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने कहा कि संघ समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों के सिंचन का कार्य कर रहा है। गीत-संगीत मनुष्य के जीवन का अनिवार्य अंग है। इसी को दृष्टिगत रखकर तनसिंह जी ने इन सहगीतों की रचना की है और ये सहगीत बुद्धि से नहीं अपितु हृदय से ही समझे जा सकते हैं। इस सहगीत में पूज्य तनसिंह ने यह विश्वास दिलाया है कि यह जाति, यह समाज, यह कौम कभी मिट नहीं सकती क्योंकि यह ईश्वरीय विधान, ईश्वरीय व्यवस्था का अंग है। आदिकाल से क्षत्रिय जाति पर आक्रमण होते रहे हैं किन्तु यह कभी नष्ट नहीं हुई। प्रत्येक बाधा को पार करके क्षत्रिय अपने स्वधर्म पालन की परंपरा को अक्षुण्ण बनाये रखने में सफल हुए क्योंकि उन्होंने त्याग और बलिदान का मार्ग नहीं छोड़ा, अपने गुण और कर्म से विमुख नहीं हुए। परशुराम द्वारा 21 बार क्षत्रियों को नष्ट करने के प्रयास भी इसीलिए असफल रहे। परंतु इस बार शत्रु द्वारा क्षत्रिय को षड्यंत्र द्वारा उसके गुण कर्म से विमुख करने का प्रयास किया जा रहा है। इस शत्रु को, उसके षड्यंत्रों को विफल करने के लिए ही पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। इस सहगीत में हमारी ऐतिहासिक विशेषताएं बताई गई हैं, हमारी परंपरा की महानता को नमन किया गया है और वर्तमान की तपस्या और संघर्ष की सफलता पर अटूट विश्वास भी व्यक्त हुआ है। 25 फरवरी की वर्चुअल शाखा में पूज्य तनसिंह जी रचित प्रार्थना 'क्षत्रिय कुल में' पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जिस प्रकार शरीर अच्छे भोजन से स्वस्थ रहता है और मन स्वाध्याय व सत्संग से मजबूत बनता है उसी प्रकार प्रार्थना हमारी आत्मा को सबल बनाती है। क्षत्रिय कुल में हमारा जन्म होना हम पर परमात्मा की कृपा है, हमारा सौभाग्य है। इसके लिए हमें ईश्वर का कृतज्ञ होना चाहिए परंतु साथ ही हमारा यह चिंतन भी होना चाहिए कि ईश्वर का हमें क्षत्रिय कुल में जन्म देने का हेतु क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ही हमारे जीवन का ध्येय भी स्पष्ट कर सकता है। क्षत्रिय कुल में जन्म मिला है तो क्षत्रिय के हित में ही जीवन बिताने की बात पूज्य तनसिंह जी ने कही है क्योंकि अमृत की रक्षा और विष के विनाश का कार्य करने वाले क्षत्रिय के हित में सृष्टि का हित स्वाभाविक रूप से निहित है। स्वधर्म पालन करने में ही क्षत्रिय का हित है और इसी में संसार का भी कल्याण है। सभी प्रकार की बाधाओं, दुविधाओं से पार पाते हुए हमें इस मार्ग पर बढ़ते जाना है, इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है। यही संदेश पूज्य तनसिंह जी ने इस प्रार्थना में दिया है। 04 मार्च को 'वंदना के गीत' प्रार्थना पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि यह समर्पण की प्रार्थना है। जो प्रार्थना हृदय से निकलती है वही परमात्मा तक पहुंचती है। हृदयगत प्रार्थना में कोई सांसारिक मांग नहीं होती अपितु कृतज्ञता, विश्वास और समर्पण का भाव होता है। इस प्रार्थना में पूज्य तनसिंह जी की समाज के प्रति पीड़ा, समय की मांग, परमशक्ति में विश्वास और उसके प्रति पूर्ण समर्पण अभिव्यक्त हुआ है। स्वयं को अकिंचन मानकर परम सत्ता के हाथों में स्वयं को सौंपकर उसका यंत्र बन जाने की चाह उन्होंने प्रकट की है। अपना सर्वस्व ईश्वर के चरणों में अर्पित करने से ही व्यक्ति जीत-हार, सफलता-असफलता के द्वंद्व से पार हो सकता है। इस द्वंद्व से पार हुआ व्यक्ति ही कर्त्तव्य के वास्तविक अर्थ को समझ सकता है और निष्काम भाव से स्वधर्म पालन में स्वयं को निःशेष रूप से खपा सकता है। ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों से ही कोई समाज और राष्ट्र सबल और स्वस्थ बन सकता है। संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि संघ के माध्यम से वही उसके जीवन को संचालित करें। **(11 मार्च की शाखा का सार-संक्षेप 19 मार्च के अंक में प्रकाशित हो चुका है।)** 18 मार्च को 'किसने बहाना ढूंढ के' सहगीत पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने कहा कि संघ हमारे जीवन में आने से हमारा जीवन किस प्रकार परिवर्तित होता है उसका वर्णन पूज्य श्री ने इस गीत में किया है। शाखा व शिविरों में आते हुए स्वयंसेवक के जीवन में जागृति का आविर्भाव होता है। इस जागृत अवस्था में ही वह यह देख पाता है कि संसार किस प्रकार की नींद में डूबा हुआ है। यह देखकर कभी वह मीठी शिकायत भी करता है कि ऐसी मीठी नींद से मुझे क्यों जगा दिया? क्यों मुझे साधना के संघर्षों में प्रवृत्त कर दिया? किन्तु जागृति की चेतना और सत्य के आनंद में यह शिकायतें स्वतः ही समाप्त होकर कृतज्ञता में रूपांतरित हो जाती है और वह स्वेच्छा और उत्साह से साधना में प्रवृत्त हो उठता है। इसी प्रकार 25 मार्च को 'बिछुड़े हुए बुलाकर' सहगीत पर चर्चा में उन्होंने कहा कि हम बिछुड़ गए हैं इसका अर्थ है कि कभी हम एक थे। हम सभी जानते हैं कि विध्वंस की अपेक्षा निर्माण का कार्य सदैव ही कठिन होता है। उसी प्रकार जो बिखर गए हैं, बिछुड़ गए हैं उन्हें पुनः एक करना भी अत्यंत कठिन होता है। संघ भी हमारे समाज को एक करने का कार्य कर रहा है। इस कार्य में किस प्रकार अपनों की ही उपेक्षा और विरोध का सामना करना पड़ता है उसकी अभिव्यक्ति तनसिंह जी ने इस गीत में की है। संघ अपने श्रम से अपने भाग्य का निर्माण करने में विश्वास करता है और अंतःकरण की साधना द्वारा पूज्य श्री के स्वप्न को साकार करने और उस स्वप्न को संसार को समझाने का कार्य कर रहा है। 1 अप्रैल को 'गहरी गड़ी' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस सहगीत में पूज्य श्री ने एक स्वप्न की बात की है। आप्त पुरुषों ने जीवन को भी एक स्वप्न बताया है और इस स्वप्न को सच्चा करना ही पुरुषार्थ बताया है। इसका अर्थ है कि जीवन एक गहरी संभावना है और इस संभावना को वास्तविकता में बदलने से ही जीवन का वास्तविक अर्थ स्पष्ट होता है। किन्तु इसके लिए संघर्ष करना पड़ता है, उन्नति के मार्ग पर निरंतर चलते रहना पड़ता है। सत्य हमारे जीवन में इतनी गहराई से आविष्ट है कि उसकी याद कभी भी समाप्त नहीं हो सकती। किन्तु जब हम सुखभोग में जीवन व्यतीत करने को ही जीवन का उद्देश्य समझ लेते हैं तो यह सत्य विवश होकर हमारे अंतःकरण की गहराइयों में ही दबा रहता है। संघ की साधना इस सत्य को रक्षित, पोषित और विकसित करके जीवन को उसकी संपूर्णता से सार्थक करने की साधना है। यह कार्य परमेश्वर की कृपा से ही संभव है इसलिए संघ भी परिणाम ईश्वर पर ही छोड़कर निरंतर अपने ध्येय की ओर बढ़ने में ही लगा रहता है। इस गीत में पूज्य श्री ने इन्हीं भावों को स्वर दिया है। इसी प्रकार 8 अप्रैल को पूज्य श्री द्वारा रचित 'जाग चेतना' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि जिस प्रकार गीता मात्र पढ़ लेने से ही जीवन में नहीं उतर जाती वैसे ही तनसिंह जी ने जो सहगीत लिखे हैं वे भी केवल पढ़ने से समझ में नहीं आ सकते। क्योंकि जब अंतर्जगत के भावों को शब्दों में व्यक्त किया जाता है तो भाषा भी अतिगहन हो जाती है। कहने वाले व्यक्ति के विचारों की उच्चता के साथ ही भाषा का स्तर भी ऊंचा होता जाता है। यह सहगीत भी ऐसे ही गहरे भावों वाला है जिसमें हमारी चेतना की जागृति की प्रार्थना की गई है और उसके लिए आवश्यक सत्य-साधना का भी आह्वान किया गया है। साथ ही इस मार्ग पर आने वाली बाधाओं जैसे अहंकार, संशय आदि का भी वर्णन है तो उनसे पार पाने के जिज्ञासा, श्रद्धा जैसे साधनों के बारे में भी बताया गया है। हमारी चेतना शक्ति को प्रकाशित करने के लिए हमें हमारे अज्ञान के बंधनों को तोड़ना होगा। तभी हमारा हृदय ऐसा मंदिर बन सकेगा जिसमें ईश्वरीय सत्य की प्राण प्रतिष्ठा की जा सकती है।

19 अप्रैल को 'गीता के आलोक में सहज कर्म' विषय पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि गीता के 18वें अध्याय के 48वें श्लोक में भगवान अर्जुन से कहते हैं कि दोषयुक्त स्वाभाविक कर्म को भी त्यागना नहीं चाहिए क्योंकि धुएं से अग्नि की भांति सभी कर्म किसी न किसी दोष से आवृत हैं। स्वधर्म के पालन से परमसिद्धि की बात भी गीता में कही गई है और स्वाभाविक कर्म को ही परमशक्ति की आराधना बताया गया है। संघ भी इसी बात को कहता है कि संघ कार्य ईश्वर की पूजा ही है और व्यष्टि को समष्टि के माध्यम से परमेष्टि तक पहुंचाने का मार्ग है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

(पृष्ठ छह का शेष)

जिस प्रकार स्वाभाविक कर्म का पालन करते हुए परिणाम को ईश्वर पर छोड़ने की बात गीता कहती है उसी प्रकार पूज्य तनसिंह जी ने भी कहा है - 'सूत्र तेरा, नृत्य मेरा.....।' स्वधर्म का पालन परधर्म की अपेक्षा हर परिस्थिति में श्रेष्ठ माना गया है। परधर्म कितना ही सुंदर व श्रेष्ठ लगे किन्तु भगवान कृष्ण ने उसे सदैव त्याज्य बताया है। बाहरी साज सज्जा से ही जो प्रभावित हो जाता है वह अन्तर के रहस्य को नहीं जान पाता और भ्रम में पड़कर नष्ट हो जाता है। उन्होंने नेपोलियन का उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार वह अपने छोटे कद को लेकर कुंठित रहता था। उसी प्रकार से व्यक्ति अन्यों को देखकर ईर्ष्यावश अपने को हीन व दूसरों को श्रेष्ठ मान लेता है और स्वधर्म की अपेक्षा परधर्म की ओर आकर्षित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को सावधान करते हुए ही कृष्ण कहते है कि दोषपूर्ण लगने पर भी स्वधर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। स्वभाव से विपरीत कर्म करने का प्रयास कभी भी सफल नहीं हो सकता। हमने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया है इसलिए क्षात्रधर्म के पालन में ही हमारा कल्याण निहित है। संघ हमें यही समझा रहा है। 25 अप्रैल को जयपुर में संघशक्ति की रविवारीय शाखा का गूगल मीट पर प्रसारण किया गया जिसमें अलग अलग संभागों से स्वयंसेवक जुड़ें। शाखा में माननीय महावीर सिंह जी ने रामनवमी के अवसर पर माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन पर चर्चा करते हुए कहा कि संघ का कार्य सामूहिक कार्य है लेकिन उस कार्य में लगने वाले का प्रयत्न व्यक्तिगत ही होता है। इस व्यक्तिगत प्रयत्न पर ही हमारी सफलता निर्भर होती है। जिस प्रकार एक ही कक्षा में एक ही शिक्षक से पढ़ने वाले विद्यार्थी अलग अलग परिणाम प्राप्त करते हैं क्योंकि उनके व्यक्तिगत प्रयासों में भिन्नता रहती है उसी प्रकार किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए हमारा प्रयत्न ही महत्त्वपूर्ण होता है। संघ ने हमें अष्टसूत्री कार्यक्रम दिया है उसका हमें व्यक्तिगत जीवन में पालन करना होता है किन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम संघ द्वारा बताए उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे। नारायणसिंह जी रेडा का उदाहरण हमारे सामने है कि किस प्रकार उन्होंने अपनी निष्ठा और दृढ़ता से उस स्थिति को प्राप्त कर लिया जिसे उनके अनेक पूर्ववर्ती व समवर्ती स्वयंसेवक नहीं प्राप्त कर सके। इसका कारण उनका व्यक्तिगत प्रयत्न ही था। शाखा के दौरान स्वयंसेवकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि संघ का कार्य करते हुए यदि हम अन्य मार्गों की ओर आकृष्ट होकर उसमें प्रवृत्त होने का प्रयास करते हैं तो उसमें हमारा और संघ दोनों का नुकसान है। व्यक्तिगत रूप से हमारा अहित तो इसलिए होगा कि हमारा स्वाभाविक कर्म न होने से हम अन्य मार्ग का ठीक से पालन नहीं कर सकेंगे और गीता के अनुसार ऐसा करने वाला पतन को प्राप्त होता है। संघ को भी इसके कारण हानि उठानी पड़ती है क्योंकि परिवार के एक सदस्य के कृत्य का प्रभाव किसी न किसी रूप में पूरे परिवार पर पड़ता ही है। संघ का कोई स्वयंसेवक यदि अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कोई अनुचित कर्म करता है तो उसके कारण संघ पर भी आक्षेप लगेंगे ही और हमें उन्हें सहन भी करना ही पड़ेगा। इसलिए आवश्यक है कि हम व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि संघ शरीर का एक अंग बन कर रहें तभी हम ऐसी परिस्थितियों से बच सकेंगे। 15 अप्रैल को 'मग भूल गया है जो' सहगीत का अर्थबोध करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि आज हम देखते हैं कि हमारे समाज के विरोध में विभिन्न माध्यमों से दुष्प्रचार किया जा रहा जिसका विरोध भी हमारे द्वारा किया जाता है जो उचित भी है। परंतु साथ ही यह प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है कि क्या हम हमारे महान पूर्वजों के मार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं? कहीं हम उस मार्ग से भटक तो नहीं गए हैं और यदि भटक गए हैं तो कौन हमारी सहायता करेगा? तनसिंह जी इस गीत में यही बता रहे हैं कि जो अपना मार्ग भूल गया है उसकी सहायता इस बेदर्द जमाने में कोई नहीं करेगा। आज हमारे समाज की भी यही स्थिति है। भौतिकवाद की चकाचौंध में अंधे होकर हम अपनी दिशा से भटक गए हैं। ऐसे में अन्यों को दोष देने से कोई लाभ नहीं होगा। हमें स्वयं ही हमारी सहायता करनी होगी। स्वयं ही सही मार्ग की पहचान कर-के उस पर चलना होगा। परिस्थितियां कितनी भी विपरीत हो, हमें आगे बढ़ना ही होगा। अपनी क्षमताओं को पहचान कर आत्मविश्वास का निर्माण करना पड़ेगा। हम भी उन्हीं पूर्वजों की संतान है जिन्होंने इससे भी कहीं अधिक कठिन परिस्थितियों में अपना कर्त्तव्य पालन किया था तो भला हम हार कर कैसे बैठ सकते हैं? यदि इस प्रकार दृढ़ निश्चय कर के अपने स्वधर्म का पालन करने में लग जायें तो देवत्व हमारे भीतर उतर आएगा। सारी बाधाएं हमारे लिए मार्ग दे देंगी और हम अपने लक्ष्य को तो प्राप्त करेंगे ही, अन्यों का भी मार्गदर्शन करके उन्हें सही राह पर ला सकेंगे। इसी प्रकार 22 अप्रैल को पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित 'मांझी हैं हम सागर के' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि क्षत्रिय कौम की अनेक विशेषताएं हैं, उनमें त्याग और संघर्षप्रियता प्रमुख हैं। यह गुण हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिले हैं। हमारे रक्त की तासीर में ये गुण निहित है। इन गुणों के अनुरूप कर्म करना ही हमारा स्वधर्म है। किंतु पिछली कुछ पीढ़ियों से हम अपने इस स्वधर्म को भुला बैठे हैं। सच्चा त्याग और संघर्ष वही है जो अन्यों के लिए किया जाय किन्तु आज हमारा त्याग और संघर्ष केवल अपने और अपने परिवार तक सीमित रह गया है। संघ हमें पुनः अपने पूर्वजों के पथ पर चलाने का कार्य कर रहा है। यह कार्य कठिनाइयों के सागर में नाव उतारने जैसा है और जिनको घाट की सुरक्षा प्रिय है उनके लिए यह कार्य नहीं है। इस गीत में तनसिंह जी यही कह रहे हैं कि हमने समय की ललकार को सुना और उसके प्रत्युत्तर में अपना सर्वस्व अर्पण करने को उद्यत हुए हैं। सांसारिक मोह के बंधनों को तोड़कर हम कर्त्तव्य पालन के लिए मझधार में कूद पड़े हैं और जो धार से डरते हैं वे दूर खड़े देखते रहते हैं। हम न तो उनके शोक से प्रभावित होते हैं, न ही उनके स्नेह से। क्योंकि कर्त्तव्य मार्ग पर तो केवल उन्हीं की मांग होती है जो साथ चल सकें। मार्ग में आने वाले तूफानों से जो घबराते नहीं अपितु संघर्ष में जीवन की शिक्षा प्राप्त करते हैं वही मंजिल तक पहुंचते हैं और वही नये प्रभात का संदेश लाते हैं। संघ भी कौम के लिए नवप्रभात का संदेश वाहक है और उसके लिए त्याग और संघर्ष के मार्ग की साधना में जुटा हुआ है।

(पृष्ठ एक का शेष)

कार्य प्रणाली... इसमें आया अवरोध हमारे लिए पछतावे का कारण बनेगा, हमारा यह जीवन बर्बाद हो जाएगा। जो अनुशासन, मर्यादाएं और संयम हमने हमारे लिए बनाये थे यदि वे कुवृत्तियों के कारण टूट जाते हैं तो हमारा जीवन व्यर्थ चला जाएगा। मनुष्य भगवान के अत्यधिक निकट है इसलिए भगवान चाहते हैं कि वह उनका स्मरण व अनुकरण करे। जो कार्य उन्होंने किए वे मनुष्य भी करे। साथ ही वे आश्वासन देते हैं कि यह करते हुए कभी दुर्गति नहीं होगी। इस आश्वासन से प्रेरणा लेकर हमें हमारे जीवन को सार्थक करना है। उन्होंने कहा कि गीता के अध्याय तीन में श्लोक 21 से 24 तक भगवान कहते हैं कि यदि मैं कर्मरत न होऊं तो संसार को पतित करने वाला बनता हूं। श्रेष्ठ लोगों की थोड़ी सी भी नेष्ठता सफेद कपड़े पर लगे दाग की तरह संसार का ध्यान आकर्षित करती है। क्षत्रिय ने जो आदर्श स्थापित किए कालांतर में उनका स्वयं ने पालन नहीं किया इसीलिए यह संसार पतन की ओर जा रहा है। पूज्य तनसिंह जी ने भारत की आजादी से पहले इस बात को समझा और तय किया कि संसार की इस विकृति को दूर करने का दायित्व हमारा है और इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में एक अर्धसैनिक बल तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया। तभी से यह प्रयत्न चालु है, देश के विभिन्न भागों में नियमित शाखा लगाकर क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण जारी है। ये संस्कार ही हमारे समाज की, इस राष्ट्र की और संपूर्ण मानवता की पूंजी है ऐसा मानते हुए हमें स्वप्न में भी इस कार्य से अलग होने का विचार नहीं आने देना है, यही भगवान राम के अवतरण दिवस पर संघ का संदेश है। बाड़मेर संभाग के साथ साथ सभी संभागों में वर्चुअल माध्यम से गुगल मीट कर रामनवमी मनाई गई। गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के वर्चुअल कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्री राम ने अपने जीवन में कर्त्तव्य को सर्वोच्च स्थान पर रखा और उसके लिए बड़ी से बड़ी कीमत चुकाने से पीछे नहीं हटे। **(शेष पृष्ठ 8 पर)**

'मेरे सहयोगी चले गए'

अत्यन्त दुःख के साथ हृदय को कठोर रख कर लिखना पड़ रहा है कि श्री गोपालशरण सिंह जी सहाड़ा का हृदय गति रुक जाने से मौके पर ही शरीर त्याग दिया। उस समय वो कार चला रहे थे। अष्टमी के दिन आशापुरा माता जी नाड़ोल में दर्शन करने गए। रात्रि विश्राम के बाद रामनवमी को वापस चित्तौड़गढ़ आ रहे थे। रास्ते में यह घटना हो गई। वो अपने पीछे पत्नी, एक पुत्र एवं तीन पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़कर गए है। पूरा परिवार श्री क्षत्रिय युवक संघ मय है। पत्नी ने कई दम्पति शिविर व तीर्थ यात्राएं साथ की हैं। पुत्र जयसिंह ने भी तीन-चार शिविर किए हैं। पुत्रियां ने क्रमशः मीना कंवर सहाड़ा ने करीब 25 शिविर, तीना कंवर ने 13 के करीब व उषा कंवर ने करीब 21 शिविर कर रखे हैं। श्री गोपालशरण सिंह मेवाड़ में मेरे प्रबल सहयोगी, जुझारू व हिम्मती स्वभाव के स्वयंसेवक थे। कोई भी काम चाहे शिविर हों, स्नेहमिलन हों, सम्पर्क यात्राएं हों, संघ शक्ति के ग्राहक बनाने हों, साहित्य विक्रय करना हो, हमेशा अग्रणी रहे। मेवाड़ में पहले तो श्री दुर्गासिंह जी रूद का सम्बल सदैव मिलता रहा, पर उनके स्वर्गवासी हो जाने के बाद थोड़ी मायूसी महसूस होने लगी, पर गोपालशरण सिंह जी के जोश व उमंग ने मुझे हिम्मत दी और श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य क्षमतानुसार सुचारू रूप से चलने लगा। उनकी खासियत थी कि उनका जान पहचान का क्षेत्र बहुत बड़ा था उनसे मालवा (म.प्र.) में कार्य करने में बड़ा सहयोग मिला। लोकसंग्रह के कार्य में उनकी जान पहचान बड़ी काम आई। सम्पूर्ण राजस्थान के किसी भी कौने से लेकर, मुम्बई, सूरत और गुजरात के काफी भू-भाग में जहां भी पूछे तो उनकी कोई न कोई जान पहचान निकल ही जाती। वर्तमान में उनको मालवा प्रान्त का दायित्व दे रखा था। वो श्री क्षत्रिय युवक संघ में तो सक्रिय थे ही, साथ ही हर राजपूत के सेवा कार्य में चाहे बीमारी में हो, पुलिस विभाग में कोई काम हो, प्रशासनिक सेवा में हो आत्मीय भाव से काम आते थे। उनके स्वभाव में 'ना' का कोई स्थान नहीं था। सामाजिक कुरीतियों का विरोध में भी गांव से लेकर हर जगह हर क्षेत्र में अडिग रहते थे। लोगों की गालियों का सामना भी करते, पर हठपूर्वक अडिग रहते। तमोवृति से छुटकारे के लिए हमेशा श्री क्षत्रिय युवक संघ का आभार हर व्यक्ति के सामने जताते ही रहते थे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए तो कर्मठ थे। मेरे तो दांये हाथ थे। किसी से भी दबते नहीं थे। आज पूरे श्री क्षत्रिय युवक संघ परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, परमपिता परमेश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं परिवार को इस दुःख की घड़ी में संबलता दे।

- गंगासिंह साजियाली

गोरखसिंह बालेसर का देहावसान

गोरखसिंह जी

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **गोरखसिंह जी** बालेसर सत्ता (जोधपुर) का 24 अप्रेल को देहावसान हो गया। आप 1957 में मेड़ता सिटी शिविर से संघ के संपर्क में आये। बी एस एफ में नौकरी के कारण संपर्क टूटा लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद नियमित सहयोगी बने रहे। आपने अपने जीवन में 17 शिविर किए। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देवें एवं परिवार को संबल प्रदान करावें।

प्रद्युम्न सिंह धोलेरा को पितृ शोक

विक्रमसिंह करणसिंह

गुजरात से संघ के स्वयंसेवक प्रद्युम्न सिंह धोलेरा के पिताजी **विक्रमसिंह करणसिंह चुड़ासमा** का विगत 5 अप्रेल को देहावसान हो गया। यह पूरा परिवार संघ से जुड़ा हुआ है। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोकाकुल परिवार को संभलने की क्षमता प्रदान करें।

गोपालशरण सिंह सहाड़ा नहीं रहे

गोपालशरण सिंह

संघ के मालवा प्रांत के प्रांतप्रमुख एवं चित्तोड़गढ़ जिले के उत्साही व कर्मनिष्ठ स्वयंसेवक **गोपालशरण सिंह सहाड़ा** का 21अप्रेल को देहावसान हो गया। 1996 के हल्दीघाटी उ.प्र.शि. से संघ के संपर्क में आये श्री सहाड़ा ने अपने जीवन में संघ के 65 शिविर किए और संपर्क में आने के बाद निरंतर जुड़े रहे। परमेश्वर इन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को इस आघात को सहने की क्षमता प्रदान करावें।

स्वयं भी सक्रिय रहें, साथियों को भी सक्रिय रखें- बैण्यांकाबास

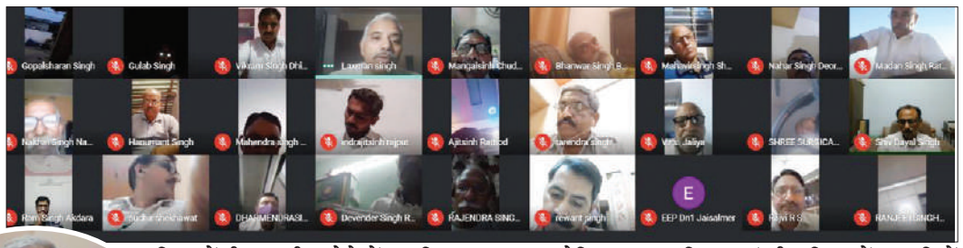

क्या मैं मेरी सक्रियता से स्वयं संतुष्ट हूं? इसका आत्मावलोकन ही अपनी सक्रियता को जांचने का सबसे बड़ा साधन है। हमारा इस बारे में चिंतन सदैव चलता रहना चाहिए और यह चिंतन ही हमें संघ कार्य में सदैव सक्रिय रख पायेगा। संघ के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की वर्चुअल बैठक को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने उपरोक्त बात कही। 19 अप्रेल की शाम 7 बजे आयोजित इस बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के सभी केन्द्रीय कार्यकारी, संभाग प्रमुख, केन्द्रीय सहयोगी एवं प्रांत प्रमुख जुड़े। सभी को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख जी ने कहा कि माननीय संघप्रमुख श्री ने हमें दायित्व सौंपा है ऐसे में अपने दायित्वाधीन क्षेत्र में एक भी स्वयंसेवक यदि निष्क्रिय होता है तो यह हमारी विफलता है। इसलिए हम तो सक्रिय रहें ही साथ ही अपने साथियों को सक्रिय रखने का दायित्व भी निभाएं। हम वर्तमान में असाधारण परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, विगत एक वर्ष से हमारे शिविर नहीं हो पा रहे हैं, अन्य भौतिक कार्यक्रम भी नहीं हो पा रहे हैं। हम प्रायः शिविरों में अनुभव के दौरान बताते हैं कि हम शिविर में चार्ज हो गये हैं, लेकिन विगत वर्ष में ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है ऐसे में हम किस प्रकार आत्म प्रेरित रह सकते हैं और कैसे अपने साथियों को प्रेरित रख सकते हैं इस बाबत अपने अपने दायित्वाधीन क्षेत्रानुसार योजना बनानी चाहिए एवं इसमें वरिष्ठ साथियों का मार्गदर्शन व सहयोग लेना चाहिए। हमारे क्षेत्र के प्रत्येक स्वयंसेवक से सप्ताह में कम से कम एक बार बात अवश्य करें, उनसे परिवार व संघ कार्य बाबत चर्चा करें। हमारे साथी की निष्क्रियता का असर हम पर पड़ता है और हमारी निष्क्रियता पूरे संघ की सक्रियता को प्रभावित करती है। इसलिए स्वयं भी सक्रिय रहें व साथियों को भी सक्रिय रखें। हमारी सुविधा के लिए केन्द्रीय स्तर पर अनेक वर्चुअल कार्यक्रम किए जा रहे हैं, संभागीय स्तर पर वर्चुअल शाखाएं लगाई जा रही हैं, उन सब में उत्साह पूर्वक भाग लेवें। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि इन असाधारण परिस्थितियों में भी हमने समाज से संपर्क बनाये रखा है, संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता आदि का कार्य निरंतर जारी है, साहित्य भी समाज के लोगों तक पहुंचा रहे हैं लेकिन केवल कुछ लोग ही सक्रिय हैं, यदि यह सक्रियता का प्रतिशत बढेगा तो काम भी गुणित होगा। यह प्रतिशत हमें दो तरफा बढ़ाना होगा। पहला हमारी स्वयं की सक्रियता का प्रतिशत बढ़ना होगा वहीं दूसरी तरफ हमारे साथियों की सक्रियता का प्रतिशत भी बढाना है। हम स्वयं भी हमारा आकलन करें कि हम स्वयं हमारी क्षमता का कितने प्रतिशत उपयोग कर पा रहे हैं और उसमें कितनी वृद्धि की संभावना है। उस आकलन के अनुरूप अपनी सक्रियता को बढायें और ऐसा ही अंतरालोकन करने के लिए अपने साथियों को प्रेरित करें। बैठक में 75 से अधिक सहयोगी जुड़े एवं चर्चा में भाग लिया। सभी ने कोरोना की परिस्थितियों में वर्चुअल माध्यम से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही एवं जुड़ाव के इस माध्यम का पर्याप्त उपयोग करने का सुझाव दिया।

(पेज सात से लगातार) **कार्य प्रणाली....** रावण पर उनकी विजय सत्य की असत्य पर, न्याय की अन्याय पर और प्रकाश की अंधकार पर विजय की प्रतीक है। उन्होंने क्षात्रधर्म का पालन करते हुए जो मयार्दाएं स्थापित की वे आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। राम के प्रति हमारी सच्ची कृतज्ञता यही है कि हम उनकी भांति मयादार्पूर्ण जीवन जियें और अपने भीतर सद्गुणों का आविर्भाव करने के लिए प्रयत्नशील बनें। संघ भी हमें हमारे भीतर राम के गुणों को उतारने और अपने अंदर के रावण को समाप्त करने का अभ्यास करवाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें संघ के बताए मार्ग पर चलने का अवसर मिल रहा है। यह वही तपस्या का मार्ग है जिस पर चलकर दशरथ पुत्र राजकुमार राम मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम बने। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची संभाग के स्वयंसेवकों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहे। जैसलमेर संभाग में संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि भगवान श्रीराम के जीवन से मयार्दाओं के पालन की शिक्षा मिलती है। आज हम देख रहे हैं कि छोटा सा पद मिल जाने पर भी व्यक्ति में अहं आ जाता है परंतु राम अपने पिता के वचन के लिए राज्य का भी सहज रूप से त्याग कर देते हैं। उन्होंने ऐसा आदर्श जीवन जिया कि करोड़ो व्यक्तियों की आस्था उनके प्रति आज भी बनी हुई है। उनकी साधारणता में भी उनकी महानता परिलक्षित होती है। एक केवट को उन्होंने अपना मित्र बनाया, सीता हरण पर किसी राजा से सहायता लेने की अपेक्षा सामान्य जनों का सहयोग लिया और वानर सेना तैयार की। सभी से प्रेम करना, सभी की सहायता के लिए स्वयं को आगे करना राम के ऐसे गुण है जिन्होंने उन्हें सर्वजन का नायक बनाया। उन्होंने आगे कहा कि रामायण के सभी पात्र हमारे लिए आदर्श है क्योंकि उनके जीवन से हमें चरित्र की उच्चता की शिक्षा मिलती है। चरित्र बल के कारण ही जटायु क्षमता न होने पर भी रावण से युद्ध से पीछे नहीं हटते, अंगद जैसा युवक रावण की सभा में पैर जमा देता है और हनुमान जैसा सेवक सोने की लंका को जला देता है। इन सभी का तपस्या पूर्ण जीवन ही इसका कारण है। आज ऐसी ही तपस्या की हमारे समाज को आवश्यकता है। संघ इसी त्याग और तपस्या का प्रशिक्षण देकर हमें राम बनाकर अपने भीतर के रावण से लड़ना सिखा रहा है। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बैरसियाला ने कहा कि राम हमारे हृदय में स्थित हैं। साधना द्वारा हमें अपने भीतरी रामत्व को जगाकर अपने जीवन को सार्थक करना है। शंभु सिंह झिंझनियाली ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। जयपुर संभाग में केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के निर्देशन में रामनवमी के उपलक्ष्य में वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन हुआ। रणधा ने अपने उद्बोधन में कहा कि राम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिसकी आज भी कोई दूसरी उपमा नहीं मिलती। सुशासन के लिए रामराज्य से बढ़कर आज भी कोई उदाहरण नहीं मिलता। पिता के वचन व माता की आज्ञा को सर्वोपरि मानकर राजतिलक छोड़कर वनवास को स्वीकारने वाले पुत्र का भी ऐसा आदर्श अन्यत्र नहीं मिलता। वानरों व आदिवासियों को संगठित करके, उन्हें सक्षम बनाकर रावण जैसे प्रबल शत्रु को भी धर्मयुद्ध में उन्होंने परास्त कर दिया। हम सभी के लिए यह गौरव का विषय है कि हम उन्हीं मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम के वंशज है। किन्तु यदि हम स्वयं को उनकी संतान मानते हैं तो हमारा आचरण भी उन्हीं की भांति मर्यादित और अनुकरणीय होना चाहिए। जिस प्रकार उन्होंने क्षात्रधर्म का पालन किया, उसी प्रकार हम भी करें तभी हम उनके सच्चे सपूत बनेंगे। संघ अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के माध्यम से हमें इसी के लिए तैयार कर रहा है। कार्यक्रम में संभाग के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। जोधपुर संभाग के कार्यक्रम में भी प्रेमसिंह जी रामनवमी का महत्व बताया।पोकरण संभाग के कार्यक्रम में केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ जुड़े। उन्होंने रामनवमी का महत्व स्पष्ट किया। जालोर संभाग के कार्यक्रम केन्द्रीय कार्यकारी रेवंतसिंह पाटोदा ने कहा कि जन जन के आराध्य भगवान राम के स्मरण के लिए आज तकनीकी के माध्यम से हम जुड़े हैं। यह श्रीराम के प्रति हमारा रागात्मक संबंध है। हम भी उसी कौम के आंगन में जन्में है जिसमें भगवान राम और ऐसे ही अनेक महापुरुषों का अवतरण युग युग से होता आया है। इसलिए भगवान राम हमारे लिए केवल पूजनीय और आराध्य ही नहीं अपितु उससे कुछ बढ़कर उनसे हमारा अपनेपन का सम्बन्ध है। जिससे हमारा अपनेपन का सम्बंध हो वह यदि हमारा आराध्य भी बन जाय तो यह संबंध और भी विशिष्ट बन जाता है क्योंकि तब उनके जैसा बनना हमारे लिए असंभव नहीं अपितु स्वाभाविक बन जाता है। यह अतिरिक्त प्रेरणा और विश्वास उस रागात्मक संबंध की ही थाती है। यह थाती हमें मिली है, यह हमारा सौभाग्य है। आज का दिन हमारे लिए कृतकृत्य होने का दिन है क्योंकि ऐसे महापुरुष आज ही के दिन हमारी कौम के आंगन में अवतरित हुए जिनके नाम के स्मरण मात्र से लोग भवसागर से तर जाने का विश्वास करते हैं। हम इसलिए तो सौभाग्यशाली है ही कि हम भगवान कहलाने वाले राम के वंशज हैं, परंतु हम इसलिए भी सौभाग्यशाली हैं कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की कृपा से हमें अपने उन पूर्वज का स्मरण करने, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और उनके दिखाए मार्ग पर चलने में सक्षम बनने का मार्ग उपलब्ध हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि किसी के महापुरुष होने के लिए तीन कसौटियां मानी जाती हैं। पहली, उस व्यक्ति के समकालीन विद्वानों और जनमानस ने उसे साहसी और तेजस्वी माना हो। दूसरी, उसने अपने पीछे संसार के लिए महत्त्वपूर्ण धरोहर छोड़ी हो। तीसरी, जिसने अपने युग का स्तर ऊपर उठाया हो। भगवान श्रीराम का जीवन इन तीनों ही कसौटियों की पराकाष्ठा है। ऐसे महापुरुष जिनके नाम से उस युग में पत्थर तैर जाते थे और आज भी जिनका नाम लेकर लोग संसार सागर से तर जाते हैं, उनके गुणों को अपने आचरण में उतारने के लिए हमें पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसा मार्ग दिया, यह हम पर परमेश्वर की कृपा है। इस कृपा के योग्य बनने की हम साधना करते रहें, इसी में हमारे रामनवमी मनाने की सार्थकता है। संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने संचालन करते हुए हीरक जयंती वर्ष की चर्चा की। इसी प्रकार नागौर संभाग के वर्चुअल कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा व संभागप्रमुख शिंभू सिंह आसरवा उपस्थित रहे तथा स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं सहित श्रीराम को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। बीकानेर संभाग के कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक राजेन्द्र सिंह आलसर स्वयंसेवकों सहित जुड़ें। उन्होंने श्रीराम के जीवनवृत्त पर चर्चा करते हुए कहा कि उनके जीवन का एक एक वृत्तांत हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। उनके जीवन का अनुसरण करके ही हम उनके वंशज होने का ऋण चुका सकते हैं। इसके लिए हमें साधना और तपस्या का वह मार्ग अपनाना होगा जो संघ के रूप में पूज्य तनसिंह जी ने हमें उपलब्ध कराया। महाराष्ट्र संभाग में भी वर्चुअल कार्यक्रम हुआ जिसमें संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना सहित समाजबन्धु उपस्थित रहे। सिंघाना ने भगवान राम के जीवनचरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि राम परम शक्ति के साकार स्वरूप थे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कई युग बीत जाने पर भी कम नहीं हुआ है। आज भी उनका नामस्मरण मात्र ही जीवन को पवित्र कर देता है, ऐसे आराध्य देव को कृतज्ञता के पुष्प अर्पण करने से भी हमारे जीवन में निखार आना स्वाभाविक है। इसीलिए संघ आज के दिन को समारोह पूर्वक मना रहा है। मध्य गुजरात संभाग के कार्यक्रम में संभागप्रमुख दीवान सिंह कानेटी ने प्रभु श्रीराम को नमन करते हुए कहा कि भगवत्ता प्राप्त महापुरुष सर्वकालिक प्रेरणास्रोत होते हैं और हर कालखंड में, हर परिस्थिति में उनके जीवन से प्रेरणा और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। इसीलिए हम युगों बाद भी श्रीराम की जयन्ती पर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए उन्हें स्मरण कर रहे हैं। उत्तर गुजरात संभाग के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संभागप्रमुख विक्रम सिंह कमाना ने कहा कि राम का जीवन भोग पर त्याग की महत्ता को प्रतिष्ठित करता है। त्याग में जीवन का वास्तविक अर्थ प्रकट होता है। इसलिए हम भी त्याग और बलिदान के सांघिक मार्ग पर निरंतर बढ़ते रहें, यही हमारे अस्तित्व की सार्थकता होगी। मेवाड़ वागड़ व मेवाड़ मालवा के स्वयंसेवक बाड़मेर संभाग के कार्यक्रम में शामिल हुए। बाड़मेर संभाग में माननीय संघप्रमुख श्री के उद्बोधन को संघ के फेसबुक पेज पर लाईव किया गया जिसे हजारों लोग देख चुके हैं।

- अभयसिंह रोडता

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org